वर्ष 1 | अंक 3 | जुलाई-सितम्बर, 2011

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

कामधेनु

परिसर स्थित तुलसी कला दीर्घा का प्रवेश द्वार

आवरण आलेख नए जीवन का निर्माण | 27

अन्तर्पृष्ठीय

अमृत पुरुष का अमृत महोत्सव | 07
तुलसी कला दीर्घा | 10
जैन विश्व भारती की 40वीं साधारण सभा | 21
ह्यूस्टन (अमेरिका) में तनाव प्रबंधन पर कार्यशाला | 30

JAIN VISHVA BHARATI
an institute dedicated to human values
Ladnun Office : Post Box No. 8, Post : Ladnun - 341 306, Dist. Nagaur, Rajasthan (India)
Phone : +91-1581-222025/080/977, Fax : +91-1581-223280
Email : secretariatldn@jvbharati.org
Kolkata Office : Mahasabha Bhawan, 3 Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001
Phone : +91-33-2235 9800, Fax : +91-33-2235 9799
Email : secretariatkol@jvbharati.org

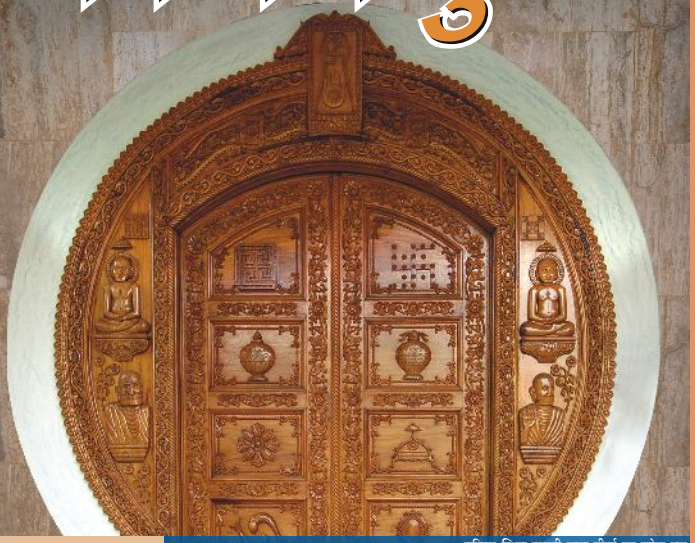

जैन विश्व भारती कुछ लोगों की दृष्टि में एक तपोवन है। इसकी तपोवन-सी आभा आकर्षण का केन्द्र बनी रहती है। कुछ व्यक्ति इसे परिभ्रमण के लिए उपयुक्त स्थान मानते हैं। प्रातःकाल के शांत वातावरण में यहां भ्रमण करने वाले ताजगी का अनुभव करते हैं। सावन, भादव महीनों में वर्षा के कारण मौसम सुहावना बन जाता है और हरीतिमा खिल जाती है, उस समय जैन विश्व भारती का वातावरण बड़ा मनभावन लगता है। आज जैन विश्व भारती की सुषमा किसी भी कवि की कल्पना शक्ति को मुखर कर सकती है। वैसे हर व्यक्ति का अपना नजरिया होता है। विश्व भारती के बारे में अपनी कल्पना को मैं एक पद्य में प्रस्तुत कर रहा हूं –

शुद्ध हवा शोधित दवा, और दुआ बिन देर।
भैया! सावण भादवै, विश्व भारती हेर।।

आचार्य तुलसी

जैन धर्म को आधुनिक स्वरूप देने का कार्य जैन विश्व भारती कर रही है। आज जैन विश्व भारती का जितना मूल्यांकन दूसरे लोग कर रहे हैं, उतना मूल्यांकन समाज के लोग नहीं कर रहे हैं। इतनी व्यापक और विशाल संस्था मेरी दृष्टि में दूसरी नहीं है, जो एक साथ अध्ययन, अध्यापन, शोध, साधना आदि अनेक कार्य कर रही है। आज इसके कर्तृत्व की अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिष्ठा करनी है। इसका दायित्व संभालना भी छोटा काम नहीं है। इसका शरीर सुन्दर बना है। प्राण संचार भी हुआ है। अब आत्मा तक पहुंचना है। गुरु कृपा जिसे प्राप्त होती है, वह हर कार्य में सफल होता है, इसमें किंचित भी संदेह नहीं है।

आचार्य महाप्रज्ञ

आशीर्वचन

अर्हम्

जैन विश्व भारती कुछ उद्देश्यों के साथ जन्मी हुई संस्था है। इसने धीरे-धीरे बहुत अच्छा विकास किया है। आज यह बहुत विशाल बन गई है। यह ऐसी संस्था है जिसे तेरापंथ के आचार्यों का महत्वपूर्ण मागदर्शन और अनुकंपा दृष्टि प्राप्त रही है।

आचार्य महाश्रमण

संजीवन बोल

मिथोलाजी में कामधेनु, कल्पवृक्ष, कामकुंभ, चिन्तामणिरत्न आदि के मिथ रूप को पढ़ते आए हैं। इन सबके साथ लोग आशाएं और अपेक्षाएं भी रखते रहे हैं। आज मौलिक कला के रूप में 'कामधेनु' हमारे सामने है। पूज्य गुरुदेव के मुख से समुच्चरित वाणी आज फलित हुई है। आपने अपने एक गीत में लिखा है –

'कामधेनु वह कामदुधाभा, वह नंदन निकुंज की आभा।'

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

कामधेनु

वर्ष 1 | अंक 2 | जुलाई-सितम्बर, 2011

परामर्श
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रकाशक
जितेन्द्र नाहटा, मंत्री
जैन विश्व भारती

संपादक
डॉ. वन्दना कुण्डलिया

संपादन-सहयोग
राजेन्द्र खटेड़

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : =91-1581-222025/080
फैक्स : +91-1581-223280
ई-मेल : secretariatldn@jvbharati.org

मुद्रक
अमृताक्षर अनन्त
7/1 बी, ग्रान्ट लेन,
कोलकाता - 700 012

अनुक्रम

आशीर्वचन	आचार्य महाश्रमण	1
संजीवन बोल	साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा	2
उपोद्घात	प्रो. मुनि महेन्द्र कुमारजी	4
अध्यक्षीय	सुरेन्द्र चोरड़िया	5
संपादकीय	डॉ. वन्दना कुण्डलिया	6
अमृत महोत्सव	आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव : एक झलक	7
पावन प्रणति	आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष (2013-14)	8
आधार-स्तंभ	जैन धर्म की अमूल्य धरोहर : तुलसी कला दीर्घा	10
दस्तावेज	अतीत के वातायन से : मुनि मोहजीत कुमारजी	13
संस्कार निर्माण	समण संस्कृति संकाय	15
प्रगति पदचिह्न		
• महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर		18
• महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर		18
• जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन		18
• 'सुखी बनो' पुस्तक लोकार्पण समारोह		19
• जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तकें		19
• तेरापंथी शिक्षण संस्थान प्रतिनिधि सम्मेलन		20
• प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन		20
• जैन विश्व भारती की 40वीं साधारण सभा संपन्न		21
• गणेश नाईक को 'अणुव्रत मित्र' पुरस्कार		21
विश्व पटल पर जैन विश्व भारती		
विदेश स्थित केन्द्रों की गति-प्रगति		22
साहित्य		
• उदात्त जीवन का उत्तुंग सोपान (पुस्तक समीक्षा) / *डॉ. शम्भु प्रसाद*		25
• आध्यात्मिक चेतना को जगाने वाली पुस्तक : Transform Your Self / *समणी विनयप्रज्ञा*		26
• नए जीवन का निर्माण / *आचार्य महाप्रज्ञ*		27
अर्हता को अभिमान		
• श्री सुरेन्द्र चोरड़िया 'समाजरत्न' अलंकरण से अलंकृत		30
आह्लादक शुभागमन		
• नागौर जिला पुलिस अधीक्षक का जैन विश्व भारती में पदार्पण		31
सिकता पर अंकित शिलालेख		
• मानवता की सेवा का श्रेष्ठ संस्थान : जैन विश्व भारती / *हेमन्त नाहटा*		32
• जैन विश्व भारती : राजनयिकों की नजर में		33
संस्मरण		
• मेरे जीवन की निर्माणस्थली : जैन विश्व भारती / *महिमा जैन*		33
नींव के पत्थर		
• 'पद्मश्री' प्रभुदयाल जी डाबड़ीवाल		34
दिशा पथ		
• दृढ़ मनोबल : जीवन की सार्थकता का रहस्य / *धर्मचन्द चौपड़ा*		35
कृती कर्मी : श्री राजेश भदौरिया		36
प्रवर्धित परिवार : जैन विश्व भारती के नए सदस्य		37
विद्यालयों में प्रौद्योगिकी का प्रयोग : स्मार्ट क्लास		38
बाल मंच		39
• अनमोल रत्न / *तनिष्क कोली* • मेरा प्यारा स्कूल / *राजेश राहानी*		
• Pencil shading work / *Ritesh Kumawat* • A crayon work / *Cheina Saini*		
पाठकीय प्रतिक्रिया		40

उपोद्घात

जैन विश्व भारती समाज की कामधेनु है। कामधेनु वह अलौकिक गौ है जो सभी आकांक्षाओं को पूर्ण कर सकती है। जैन विश्व भारती के माध्यम से समग्र मानव-जाति की जागतिक समस्याओं का सटीक समाधान संभव है। यही स्वप्न था गुरुदेव गणाधिपति तुलसी का, अध्यात्म-योगी आचार्य श्री महाप्रज्ञ का और यही स्वप्न है महातपस्वी युवामनीषी आचार्य श्री महाश्रमणजी का।

कामधेनु द्वारा समस्त कामनाओं की पूर्ति तभी संभव है जब कामधेनु को पर्याप्त संपोषण प्राप्त हो। हमारे सबसे बड़े ऊर्जा-स्रोत हैं आचार्य प्रवर। उनका मार्गदर्शन, आध्यात्मिक निर्देशन एवं प्रेरक उद्बोधन हमें अहर्निश पल-पल मिल रहा है। उनसे करबद्ध सविनय प्रार्थना है कि वे इस प्रेरणा पाथेय को और अधिक सशक्त एवं ओजस्वी बनाने की कृपा करें। वे समस्त चारित्रात्माओं एवं समण-समणीगण को भी इस दृष्टि से संप्रेरित करें।

इस कामधेनु का सामाजिक संपोषण तीन रूपों में है --

1. मानव संसाधन की संपूर्ति।
2. वित्तीय संसाधन की संपूर्ति।
3. बुनियादी सुविधाओं (इन्फ्रास्ट्रक्चर) की संपूर्ति।

प्रथम संसाधन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसके बिना अन्य संसाधन कार्यक्षम नहीं बन सकते। इस कामधेनु के संपोषणार्थ 'मानव-संसाधन' के रूप में समाज के सेवाभावी, प्रबुद्ध, योग्य एवं समर्पित संघनिष्ठ व्यक्ति हो तो सारी प्रवृत्तियाँ सुचारु रूप से चल सकती हैं। भले ही वे मानद रूप में सेवाएं समर्पित करने वाले हों या वैतनिक रूप में।

दूसरे क्रम में है - वित्तीय संसाधन। समाज की बहुत सारी परियोजनाएं (Projects) एवं बहुमुखी प्रवृत्तियां इस संसाधन की संपूर्ति के बिना परिणामदर्शी नहीं बन सकती।

तीसरे संसाधन के रूप में बुनियादी सुविधाओं (इन्फ्रास्ट्रक्चर) के विकास का भी बहुत महत्व है। जिसमें भूमि, भवन, सड़क, बिजली, पानी, परिसर की सुंदरता, स्वच्छता आदि शामिल हैं।

यदि समाज द्वारा कामधेनु की सेवा सशक्त रूप में उक्त अपेक्षाओं के संपोषण के रूप में होती रहेगी तो कामधेनु भी समाज की इच्छित मनोकामनाओं को बराबर पूरा करती रहेगी। जैसे यह सत्योक्ति है कि '**धर्मो रक्षति रक्षितः**' यानी यदि आप धर्म की रक्षा करेंगे अर्थात धर्म का पालन करेंगे तो धर्म आपकी रक्षा करेगा, वैसे ही कामधेनुः रक्षति रक्षिता भी है।

तेरापंथ समाज सदैव संघ और संघपति के प्रति आत्मना समर्पित रहा है। समर्पण का फलितार्थ है – जो गुरुओं का स्वप्न है, मिशन है – उसे साकार करना। इस कामधेनु को कामयाब बनाने के लिए पूरा समाज एकजुट हो, यह अपेक्षित है। तभी आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण का यह स्वप्न साकार होगा।

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार

(प्रभारी संत, जैन विश्व भारती)

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

अध्यक्षीय

वर्तमान युग उन विशिष्टात्माओं का चिरऋणी है, जिन्होंने अपनी दृष्टि संपन्नता से अतीत को गौरवान्वित किया है, वर्तमान को आलोकित किया है और भविष्य को सार्थक दिशा बोध दिया है। ऐसी विशिष्टात्माओं से केवल समाज और राष्ट्र ही उपकृत नहीं होता, अपितु समग्र मानव जाति का कल्याण होता है। ऐसी मेधासंपन्न विशिष्टात्माओं की श्रृंखला में आचार्य तुलसी एक ऐसे महापुरुष हुए हैं जो अपने युगांतकारी चिंतन और क्रांतिकारी विचारों से शताब्दी पुरुष बनकर विश्व क्षितिज पर आलोकित हुए।

संपूर्ण धर्मसंघ के लिए परम सौभाग्य का प्रसंग है कि आगामी सन् 2013-14 में महान युगपुरुष आचार्यश्री तुलसी की जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। आचार्य तुलसी एक श्लाकापुरुष थे। उन्होंने न केवलत ेरापंथध ार्मसंघक ो नई ऊँ चाइयांअ ौरन ाएउ न्मेष दिए,ब ल्किस ंपूर्णज ैनश ासनअ ौरम ानव जाति के हितार्थ अणुव्रत आन्दोलन और रूढ़ि उन्मूलन का अभियान चलाकर युग को एक नई दिशा दी तथा जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, नारी-शिक्षा, आगम-संपादन जैसे अनेक नए-नए अवदानों से विश्व मानवता को उपकृत किया, जिनसे आने वाली शताब्दियां उस महामानव के उपकारों को आदर के साथ स्मरण करती रहेगी।

आचार्य तुलसी के अनेक अवदानों में एक विशिष्ट अवदान है – 'जैन विश्व भारती', जो स्वयं उनके शब्दों में 'समाज की कामधेनु है।' आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में 'जैन विश्व भारती आचार्य तुलसी का एक स्वप्न, एक कल्पना और एक यथार्थ है।' अतः जैन विश्व भारती अपने कल्पनाकार की जन्म शताब्दी के अवसर पर कुछ ऐसा ठोस कार्य करने के लिए संकल्पित है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ दीर्घकाल तक इस कामधेनु का दोहन करते हुए इच्छित फल की प्राप्ति करे और समाज की अपेक्षाओं की पूर्ति करे।

शताब्दी वर्ष के महत्वपूर्ण आयोजन पर आवश्यकता इस बात की है कि हम तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण के निर्देशन एवं अनुशासना में आचार्य तुलसी के स्वप्नों की भाषा को समझें, अपने कर्म की गति को पकड़ें और कुछ ठोस कार्यों को अंजाम दें। यद्यपि जैन विश्व भारती ने शताब्दी वर्ष की आयोजना के संबंध में कुछ योजनाओं को क्रियान्वित करने का चिंतन किया है तथापि करणीय कार्यों की संभावनाओं का खुला आकाश है, जिसमें आप सभी के चिंतन का स्वागत है।

सुरेन्द्र चोरड़िया

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

संपादकीय

मत के संबंध में दो स्थितियाँ जनप्रचलित हैं – अल्पमत और बहुमत। कहा जाता है कि जब अल्पमत मुखर होता है तब बहुमत मौन हो जाता है। किन्तु जब बहुमत की किसी बात को कोई व्यक्ति या संस्थान प्रतीक बनकर कहता है तो वह व्यक्ति 'स्टेट्समैन' हो जाता है और अल्पमत भी उस परिवर्तन को स्वीकृति दे देता है। इस परिवर्तन से जिस संस्कृति का जन्म होता है वह होती है - मानवता को त्राण देने वाली, मानवता को बोध देने वाली और मानवता की रक्षा करने वाली।

ऐसी सभ्यता और संस्कृति को जन-जन के मानस में मुखरित करने वाली है – जैन विश्व भारती। आचार्य तुलसी की कल्पना की परिणति यह संस्था विगत चार दशकों से शिक्षा, शोध, सेवा, साधना, साहित्य, संस्कृति और समन्वय के सात सकारों के द्वारा मानवीय चेतना को जागृत कर विश्व संस्कृति और विश्व सभ्यता के निर्माण में अहर्निश कार्यरत है। जैन समाज की सांस्कृतिक संपदा को समृद्ध कर अनेक मानव कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन जैन विश्व भारती के द्वारा किया जा रहा है।

ऐसी ओजस्वी और तेजस्वी संस्था, जैन विश्व भारती की ऊर्जा रश्मियों का एक प्रतिबिम्ब है - **कामधेनु**। कामधेनु पत्रिका के प्रकाशन का चिंतन हुआ, चिंतन की क्रियान्विति हुई और परिणामस्वरूप इसका तृतीय अंक मूर्त रूप में हमारे समक्ष है। पूर्व के दो अंकों के संबंध में विशिष्टजनों एवं पाठकों के अमूल्य सुझाव एवं विचार हमें प्राप्त हुए, एतदर्थ कृतज्ञता। आशा करते हैं कि भविष्य में भी पाठकों की प्रतिक्रिया हमें इसी प्रकार मिलती रहेगी।

आगामी वर्षों में संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अगले चरण और आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी समारोह की आयोजना करने जा रहा है। ऐसे विशिष्ट अवसरों पर जब इन महापुरुषोंके ि वचारोंक ोह मज ाीएंगे,उ नकीस ोचज ाबस ंकल्पब ानकरह मारेज ाीवनम ेंउ तरेगी,व ही क्षण, वही पल हमारी वास्तविक उपलब्धि होगी।

इस मंगल अवसर पर सबके प्रति मंगलकामना करते हुए कामधेनु का यह अंक प्रस्तुत है कि –

बसेगा विश्व फिर नूतन, नया आलोक फैलेगा
नव जागरण का संदेश मनुज हर ओर भेजेगा
कि सोया मन जग जाए ऐसा गीत गाना है
ले नव निर्माण का संकल्प, हमें उस पार जाना है।

डॉ. वन्दना कुण्डलिया

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव
द्वितीय चरण (7-9 सितंबर, 2011) झलकियाँ

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ और समाज को महत जीवन का संदेश देने वाला एक ऐसा महायज्ञ है, जिसके हवनकुंड से निर्गत तप, त्याग और साधना की सुवासित सुरभि संपूर्ण देश में फैल रही है और पंचाचार की प्रज्वलित प्रभा मानव जाति के चारित्रोन्नयन हेतु पथ प्रशस्त कर रही है।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011
जैन विश्व भारती कामधेनु

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

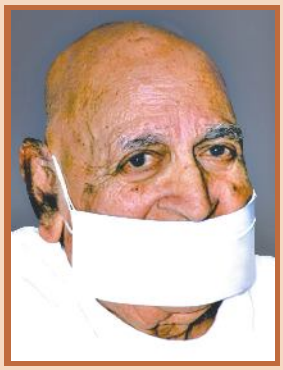

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष (2013-14)

भारत की आध्यात्मिक वसुंधरा पर अनेक ऐसे विराट व्यक्तित्व उभर कर आए, जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा से विश्व चेतना के तारों को झंकृत किया और युग के कैन्वास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। ऐसे ही विराट व्यक्तित्वों की प्रथम पंक्ति में अंकित होने वाला नाम है - 'आचार्य तुलसी'। अपनी अतिशय विशिष्टताओं, असाधारण अर्हताओं एवं अद्वितीय चिंतन के कारण वे तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए और कालान्तर में गणाधिपति बनकर दीपित और शोभित हुए। आचार्यत ुलसीन ेअ पनेज ीवनकालम ेंम ानवस माजम ेंप रिमार्जनअ ौरप रिशोधनके ि लएए कए ेसी क्रांति का सिंहनाद किया, जिसके प्रबल घोष ने देश के हर वर्ग के व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित किया। चारित्रोन्नयन, नैतिकता, सदाचार, सद्भाव और सौहार्द के संदेश ने आचार्य तुलसी और तेरापंथ धर्मसंघ की यशोगाथा दसों दिशाओं में फैला दी। वे एक ऐसे सृजनधर्मी व्यक्तित्व बनकर उभरे, जिनकी रचनात्मकता और क्रांतिकारी सृजनशीलता से सर्वत्र शांति का सागर लहराने लगा।

ऐसे अपरिमेय पुंसत्व से समृद्ध महापुरुष के आर्विभाव की एक सदी की पूर्णता के अवसर पर संपूर्ण धर्मसंघ और समाज अपने ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन में वर्ष

2013-14 में **'आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह'** का आयोजन अनंत आस्था और समर्पण के साथ करने जा रहा है।

आचार्य तुलसी ने अपने जीवन काल में जिन क्रांतिकारी उपक्रमों का शंखनाद किया, उनमें एक **जैन विश्व भारती** की स्थापना भी है, जो न केवल तेरापंथ धर्मसंघ एवं जैन धर्म के लिए, अपितु संपूर्ण मानवता के लिए **'कामधेनु'** बनकर अवतरित हुई।

आचार्य तुलसी ने 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' के सद्घोष की प्रयोगशाला के रूप में जैन विश्व भारती का कार्यक्षेत्र निर्धारित किया और उसमें व्यक्ति परिवर्तन से लेकर विश्व परिवर्तन तक की गतिविधियों को शामिल किया। उनकी वर्षों पूर्व की दूरदर्शिता और कल्पना की यथार्थ परिणति 'जैन विश्व भारती' आज विश्व क्षितिज पर अपना परचम फहरा रही है।

ऐसे महामानव की जन्म शताब्दी के अवसर पर धर्मसंघ एवं समाज की सभी संस्थाएं श्रद्धा से अभिभूत अपनी भावांजलि विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उन्हें समर्पित करने जा रही है। इसी क्रम में जैन विश्व भारती ने अपने कल्पनाकार एवं प्रथम अनुशास्ता की जन्म शताब्दी के आयोजन को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से निम्नलिखित योजना प्रस्तुत की है –

1. **आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर का निर्माण -** आचार्य तुलसी के निर्देशन में आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत 'प्रेक्षाध्यान' को एक महत्वपूर्ण ध्यान पद्धति के रूप में प्रारंभ किया गया। जैन विश्व भारती की स्थापना के समय ही आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने इसके अन्य उद्देश्यों के साथ-साथ प्रेक्षाध्यान के अंतरराष्ट्रीय केन्द्र के रूप में जैन विश्व भारती को विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। वर्तमान में इस सेन्टर का निर्माण कार्य जारी है। यह आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर जैन विश्व भारती द्वारा पूज्य गणाधिपति को समर्पित एक अनुपम भावांजलि होगी।।

2. **साहित्य प्रकाशन -** जैन विश्व भारती द्वारा आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित विशद साहित्य संभार का नए प्रारूप में पुनर्प्रकाशन एवं शताब्दी वर्ष से संबंधित अन्य साहित्य के प्रकाशन का चिंतन किया गया है।

3. **आचार्यत ुलसीज न्मश ताब्दीव याख्यानमाला-** जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अंतर्गत आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी व्याख्यानमाला के शुभारंभ का चिंतन किया गया है।

4. **आचार्य तुलसी चेयर की स्थापना -** जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अंतर्गत आचार्य तुलसी चेयर की स्थापना का चिंतन किया गया है।

5. **आचार्य तुलसी कीर्तिस्तम्भ का निर्माण -** आचार्य तुलसी के जीवन की गौरवगाथा को चिरस्थायी बनाने की दृष्टि से आचार्य तुलसी कीर्तिस्तम्भ के निर्माण का चिंतन किया गया है।

6. **विश्व सर्वधर्म सद्भाव सम्मेलन -** आचार्य तुलसी ने धर्म का असाम्प्रदायिक रूप प्रस्तुत किया एवं सर्वधर्म सद्भाव का संदेश दिया। उसी दिशा में बृहद स्तर पर एक विश्व सर्वधर्म सद्भाव सम्मेलन के आयोजन का चिंतन किया गया है।

उक्त योजनाओं की क्रियान्विति के संदर्भ में किस प्रकार के ठोस कदम उठाए जाने चाहिए तथा शताब्दी वर्ष के परिप्रेक्ष्य में जैन विश्व भारती द्वारा अन्य कौन से महत्वपूर्ण कार्य किए जाने चाहिए, इस संदर्भ में जैन विश्व भारती के सदस्यों एवं समस्त पाठकों के सुझाव एवं विचार सादर आमंत्रित हैं।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

जैन संस्कृति की अमूल्य धरोहर : तुलसी कला दीर्घा

जैन विश्व भारती का संपूर्ण परिसर अनेकानेक विशिष्टताओं को अपने में समेटे हुए है। परिसर में अनेक आकर्षण-केन्द्र हैं, जिनमें तुलसी कला दीर्घा का स्थान उल्लेखनीय है। तेरापंथ धर्मसंघ की प्राचीन संस्कृति, विरासत, अमूल्य धरोहरों एवं बहुमूल्य कृतियों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने के उद्देश्य से इस कला दीर्घा की स्थापना की गई थी, जिसका अनावरण गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर 13 जून 1998 को राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह शेखावत द्वारा किया गया था।

तुलसी कला प्रेक्षा में जैन कला के विशिष्ट चिह्न, तेरापंथ संप्रदाय के साधु-साध्वियों की विलक्षण हस्तकला, चित्रकला, हस्तलेख, सूक्ष्माक्षर, लिपिकला एवं विभिन्न कलाकारों की कृतियों को सुरक्षित रखा गया है।

कला प्रेक्षा के काष्ठ निर्मित प्रवेश द्वार पर उत्कीर्ण बारीक कारीगरी बेजोड़ है। द्वार पर उत्कीर्ण तीर्थंकर के चित्र, अष्टमंगल के चिह्न आदि कला दीर्घा की कलात्मकता का परिचय देते हैं। तुलसी कला प्रेक्षा में प्रवेश करते ही आचार्य तुलसी की चिर-परिचित मुद्रा में एक ऐसी जीवंत तस्वीर आँखों के सामने प्रकट होती है, जिससे आने वाले हर दर्शक को यह आभास होता है कि गुरुदेव के आशीर्वाद भरे हाथ उन्हें शुभाशीषों से अभिस्नात कर रहे हैं और उनकी अजस्र करुणा भरी दृष्टि उन पर बरस रही है। उसके बाद जैसे ही कला दीर्घा में प्रवेश करते हैं तो कला केन्द्र में विद्यमान विभिन्न कला प्रस्तुतियों का नयनाभिराम दृश्य मंत्रमुग्ध करने लगता है।

चित्रकला

कला के क्षेत्र में चित्रकला का अपना विशिष्ट स्थान है। चित्रकला में रेखाचित्र, रंग, आकार आदि का सामंजस्य चित्रों को सजीवता प्रदान करते हैं। कला दीर्घा में जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभ, अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ और महावीर के जीवन दर्शन को दर्शाने वाले चित्रों में चित्रकला की विद्या का अनूठापन देखने को मिलता है। इन चित्रों को देखकर ऐसा लगता है मानो चित्रों की जीवंतता स्वयं अपनी कहानी कह रही हो। चित्रों की श्रृंखला में अनासक्ति, संयम और निःस्वार्थ भाव का संदेश देने वाले रंगीन चित्र शिक्षाप्रद हैं। जैन मुनियों द्वारा निर्मित होने के कारण इन चित्रों में आध्यात्मिकता और धार्मिकता का पुट स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इसके साथ ही जहां एक ओर देवलोक की विलास क्रीड़ा, नृत्य-संगीत, भवन, रंगशाला आदि के आकर्षक चित्र हैं तो वही दूसरी ओर विभिन्न कुकर्मों यथा चोरी, झूठ, मृग शिकार, धूम्रपान आदि के परिणामों को बहुत मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है। इसी के साथ स्वप्न विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, शगुन शास्त्र, बुद्धि परीक्षा आदि के भी अद्भुत चित्र यहां उपलब्ध हैं।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

चित्रकला की विभिन्न विधाओं में इस कला दीर्घा में पेंसिल से निर्मित चित्र आने वाले हर दर्शक का मन मोह लेते हैं। इन चित्रों में विभिन्न महापुरुषों के चित्रों को देखकर दर्शक अभिभूत हो सकता है। इसी के साथ उदयपुर का जल मन्दिर, जीवो जीवस्य जीवनम्, नीति-अनीति, करणीय-अकरणीय आदि से संबंधित चित्रों को देखकर दर्शक दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं। तेरापंथ संप्रदाय के साधु-साध्वियों द्वारा निर्मित आकर्षक चित्र, चित्रकला के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। चित्रों के साथ-साथ अनेक चित्रमय काव्य भी इस कला दीर्घा में मौजूद हैं। चित्रकला के क्षेत्र में मुनिश्री सोहनलालजी एवं मुनि श्री चांदमलजी की कृतियां विशिष्ट हैं।

हस्तकला

तुलसी कला प्रेक्षा में हस्तकला की विभिन्न विधाओं का संगम दर्शकों को देखने को मिलता है। हाथ से निर्मित इन कलाकृतियों में पेपर कटिंग, पीपल के पत्तों पर कारीगरी, सूत की गुंथाई, सिलाई कला आदि को देखकर विस्मय होता है कि साधु-साध्वियों के द्वारा भी ऐसी श्रेष्ठ कला का संपादन किया जा सकता है।

कला दीर्घा में कैंची द्वारा पेपर कटिंग की बनी कलाकृतियां बरबस ही दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। इन कृतियों में वटवृक्ष का चित्र, पशु-पक्षी, फूल-लताएं, बोध वाक्य, व्यक्तियों के नाम आदि प्रमुख हैं, जो कागज को काटकर बनाए गए हैं। इस कला दीर्घा में महावीर का जीवन दर्शाने वाली कृति अति आकर्षक है।

हस्तकला में पीपल के पत्तों पर निर्मित कृतियां, कलाकार के कला कौशल का परिचय करवाती है। वर्षों पूर्व पीपल के पत्तों पर बनाए गए ऊँ, अर्हम्, नवकार मंत्र, ग्रामीण बाला आदि के चित्र अत्यंत आकर्षक और अद्भुत लगते हैं। इन कृतियों में कलाकार की कला सहज रूप से ही दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

तेरापंथ संप्रदाय में हस्तकला के क्षेत्र में साधु-साध्वियों द्वारा की गई सिलाई कला विशेष उल्लेखनीय है। मशीनी उपकरणों के बिना की जाने वाली साधु-साध्वियों की सिलाई कला को देखकर आँखों पर यकीन नहीं होता है। केवल सुई की सहायता से निर्मित वस्त्र, रजोहरण, प्रमार्जनी, पछेवड़ी, चोलपट्ट, मुखवस्त्रिका कवच, पुस्तक कवच आदि की सिलाई की सफाई और बारीकी बेजोड़ है। सूत की गुंथाई कला से निर्मित माला एवं अन्य वस्तुएं भी अनूठी हैं।

हस्तलेख एवं सूक्ष्माक्षर लिपिकला

पांडुलिपियों के विकास एवं संरक्षण की दृष्टि से भी जैन धर्म के साधु-साध्वियों का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। तेरापंथ संप्रदाय के साधु-साध्वियों की प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों का यहां अद्भुत संग्रह है। लेखन कला की दृष्टि से सूक्ष्माक्षर लेखन की कृतियां आश्चर्यजनक हैं। साधु-साध्वियों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का लेखन अत्यन्त सूक्ष्म अक्षरों में किया गया है। भगवत् गीता और उत्तराध्ययन की अत्यन्त सूक्ष्म कला देखकर अपार विस्मय होता है। उर्दू भाषा में कुरान भी काफी सूक्ष्म अक्षरों में लिखी गई है। प्राचीन पांडुलिपियों में 18वीं शताब्दी के ताड़पत्र पर कन्नड़ व उड़िया भाषा में लिखी गई भगवत् गीता, कृष्ण गोपी लीला एवं अन्य सचित्र हस्तलेख विशेष आकर्षण का केन्द्र हैं। साधुओं द्वारा लिखित हस्तलेखों में मुनि शिवराजजी का उत्तराध्ययन, मुनि दुलीचंद (दिनकर) द्वारा लिखित संस्कृत श्लोक, मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' का शांत सुधारस आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त तुलसी कला दीर्घा में प्लास्टिक, चंदन, लकड़ी आदि पर लिखे हस्तलेख भी सुरक्षित हैं।

अमूल्य धरोहरें

तुलसी कला दीर्घा में एक ओर जहां जैन धर्म की समृद्ध कला और संस्कृति को दर्शाने वाली अद्भुत

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

कलाकृतियां संरक्षित हैं, वहीं दूसरी ओर इस केन्द्र में तेरापंथ संप्रदाय की अनेक धरोहरें भी सुरक्षित हैं। इन धरोहरों में आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ को प्रदत्त विभिन्न राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय सम्मानों के अभिनंदन-पत्र और प्रतीक चिह्न प्रमुख हैं। आचार्य तुलसी को प्राप्त भारत ज्योति सम्मान, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हकीम खां सूर सम्मान आदि के प्रतीक चिह्न यहां सुरक्षित हैं। इसी के साथ आचार्य तुलसी को विभिन्न धर्मगुरुओं द्वारा प्रदत्त उपहारों को भी कला दीर्घा में सहेज कर रखा गया है, जिनमें दिगम्बर आचार्य विद्यानन्दजी, बोहरा समाज के गुरु सैयद मोहम्मद, आर्ट ऑफ लिविंग के श्री श्री रविशंकर द्वारा प्रदत्त स्वर्ण व रजत की वस्तुएं प्रमुख हैं। इसी क्रम में आचार्य महाप्रज्ञ को प्राप्त विभिन्न सम्मान यथा – 'मैन ऑफ द ईयर', 'राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भावना पुरस्कार' आदि के अभिनंदन-पत्र एवं प्रतीक चिह्न उपलब्ध हैं। तेरापंथ संप्रदाय के साधु-साध्वियों द्वारा अपने आचार्य को भेंट की गई अभिन्न कलात्मक वस्तुएं भी यहां सुरक्षित एवं संरक्षित हैं।

यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि लाडनूं जैसे छोटे कस्बे में स्थित यह तुलसी कला दीर्घा संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में 'गागर में सागर' की कहावत को शब्दशः चरितार्थ करती है। कला मर्मज्ञों एवं कला प्रेमियों की दृष्टि से भी यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तेरापंथ धर्मसंघ की इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित कर **'जैन विश्व भारती'** जैन कला और संस्कृति के विकास एवं संरक्षण में योगदान देने का सद्प्रयास कर रही है।

बोध कथा

एक संन्यासी कहीं जा रहा था और सामने से राजा शिकार करके आ रहा था। राजा के मन में संदेह हो गया कि महल का रास्ता यही है या कोई दूसरा है? सोचा, बाबाजी से पूछ लूं?

राजा-बाबाजी! राजप्रसाद का रास्ता कौन सा है?

संन्यासी ने राजा को ध्यान से देखा तो पता चला कि राजा तो शिकार खेल कर आया है। इसके पास मरा हुआ खरगोश है। राजा को समझाना चाहिए ताकि इसका जीवन अच्छा बन सके, इसकी आत्मा का कल्याण हो सकें।

संन्यासी ने अपने ढंग से जवाब दिया - राजन्! मैं दो रास्ते जानता हूं। एक तो अधोगति का मार्ग और एक उर्ध्वगति का मार्ग। एक नरक आदि में ले जाने वाला रास्ता, दूसरा मोक्ष में ले जाने वाला रास्ता। हिंसा अधोगति का मार्ग है और अहिंसा मोक्ष का मार्ग है। तुम्हें कौन सा रास्ता चाहिए? राजा बड़ा संबुद्ध था। वह समझ गया कि मुझे उपदेश दिया जा रहा है। राजा ने जिन्दगी भर शिकार नहीं करने का संकल्प ले लिया।

आचार्य महाश्रमण

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

अतीत के वातायन से

गतांक से आगे .....

श्री भंवरलालजी दूगड़ ने जैन विश्व भारती की परिकल्पना के संबंध में उसकी सदस्यता, संचालन, आवश्यकता आदि के संबंध में आगामी योजना जो प्रस्तुत की थी, वह अग्रलिखित है –

सदस्य

भारतीय संस्कृति एवं जैन तत्त्वज्ञान में अभिरुचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसका सदस्य हो सकेगा।

सदस्य निम्नांकित श्रेणियों में विभक्त होंगे –

(क) साधारण (ख) आजीवन (ग) सहायक (घ) सम्मान्य (च) संरक्षक।

संचालक

संस्था के समस्त साधारण, आजीवन, सहायक, सम्मान्य तथा संरक्षक सदस्यों की एक साधारण परिषद होगी। वर्ष में इसका कम से कम एक अधिवेशन आवश्यकरूपेण होगा। साधारण परिषद संस्था के लिए नीति-निर्धारण, उसका संचालन, संवर्द्धन आदि उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए एक अधिष्ठात्री परिषद का परिगठन करेगी। अधिष्ठात्री परिषद का कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। इसमें अधिक से अधिक 51 सदस्य होंगे जिनमें 25 सदस्य साधारण परिषद द्वारा निम्नांकित अनुपात क्रम से निर्वाचित होंगे।

(1) साधारण सदस्यों में से प्रतिशत निर्धारण अनुसार।
(2) आजीवन सदस्यों में से प्रतिशत निर्धारण अनुसार।
(3) सहायक सदस्यों में से प्रतिशत निर्धारण अनुसार।
(4) सम्मान्य सदस्यों में से प्रतिशत निर्धारण अनुसार।
(5) संरक्षक सदस्यों में से प्रतिशत निर्धारण अनुसार।

साधारण परिषद द्वारा अधिष्ठात्री परिषद के लिए निर्वाचित सदस्य अवशेष स्थानों की निम्नांकित रूप से पूर्ति करेंगे : -

(1) देश के लब्ध प्रतिष्ठित, सम्भ्रांत विद्वानों एवं सहयोगियों का मनोनयन।
(2) संस्था के कार्य-निर्वहन में उपयोगी विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं का संग्रह।
(3) संस्था के बहुमुखी कार्यों के संचालनार्थ परिगठित विभिन्न समितियों में से प्रत्येक के संयोजक तथा विभिन्न विभागों के प्रधानों की पदेन सदस्यता।

परिषद के निम्नांकित पदाधिकारी होंगे जो उनके द्वारा निर्वाचित किए जाएंगे।

(1) अध्यक्ष (2) उपाध्यक्ष (3) महामंत्री (4) मंत्री (5) व्यवस्थापक (6) कोषाध्यक्ष (7) विभाग परीक्षक

संस्था के दैनन्दिन कार्य - परिचालन के लिए अधिष्ठात्री परिषद् द्वारा मनोनीत एक प्रबंध समिति रहेगी, जिसके निश्चित सदस्य होंगे। वह संचालन संबंधी सौविध्य तथा आनुकूल्य हेतु अपना विधिक्रम स्वयं निर्धारित करेगी एवं अधिष्ठात्री परिषद से उसकी स्वीकृति लेगी। शैक्षणिक संस्थान, छात्रावास, प्रकाशन पीठ, श्रुतमंच आदि के कार्य निर्वहन के लिए अधिष्ठात्री परिषद एक उपसमिति मनोनीत करेगी जो प्रबंध-समिति के परामर्श से उन प्रवृत्तियों को चालू रखेगी। प्रबंध समिति अधिष्ठात्री परिषद के प्रति उत्तरदायी होगी।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

आवश्यकताएं

(1) अनेकांत महाविद्यालय, शोध-संस्थान तथा पुस्तकालय के लिए भवन-निर्माण।

(2) छात्रावास के लिए भवन-निर्माण।

(3) पुस्तकालय के लिए पुस्तक-संग्रह।

भारतवर्ष तथा विदेश की किसी भी भाषा में प्रकाशित समग्र जैन वाङ्मय एवं तत्संबंधी तुलनात्मक साहित्य पुस्तकालय में संगृहीत करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

श्री भंवरलालजी दूगड़ ने जैन विश्व भारती की उपर्युक्त योजना प्रस्तुत कर जन-आह्वान किया। उनका चिंतन था कि जैन दर्शन का मूल आधार श्रुत ज्ञान है। श्रुत परम्परा को यदि अक्षुण्ण रखा जा सके, असाम्प्रदायिक एवं व्यापक रूप में तुलनात्मक अध्ययन, अनुशीलन व अनुसंधान द्वारा उसे और अधिक विकसित बनाकर जैन शासन की सेवा की जा सकती है। एक और बात पर ध्यान आकृष्ट करवाते हुए उन्होंने कहा कि आधुनिक समाज में जैन संस्कार धूमिल होते जा रहे हैं। परिवार के वरिष्ठ सदस्य न स्वयं तत्वज्ञान, जैन विद्या आदि का अध्ययन करते हैं न ही बच्चों को ऐसा करने की प्रेरणा देते हैं। इस हेतु भी विशेष जागरूकता की आवश्यकता है।

इन्हीं भावनाओं को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से श्री भंवरलालजी दूगड़ ने जैन विश्व भारती के परिगठन की योजना प्रस्तुत की। इसके निर्माण के लिए प्रारंभ में पांच लाख रुपये की अर्थराशि अपेक्षित थी, जिसके लिए जैन समाज से अनुरोध किया गया।

विशेष - मुनिश्री मोहजीतकुमारजी के जैन विश्व भारती के इतिहास से उद्धृत।

(क्रमश : अगले अंक में)

बोध कथा

गांधीज ीब ैरिस्टरथ े।ए कव यक्तिउ नकेप ासआ याअ ैरब ोला--म ैंस ंकटम ेंहूँ ।म ेराए ककेसअ ाप अपने हाथ में लें और मुझे पार लगाएँ।

गांधी जी – भाई, यह केस सच्चा है या झूठा?

व्यक्ति -- मोहनदास जी! केस है तो झूठा, किंतु आप बड़े बुद्धिमान हैं। आप हाथ में ले लेंगे तो मुझे बचा लेंगे।

गांधी जी – मैं गलत केस हाथ में नहीं लूंगा।

व्यक्ति – मैं आपको बहुत पैसा दूँगा।

गांधी जी – कितना भी पैसा दो, गलत काम मैं हाथ में नहीं लूँगा।

वह व्यक्ति किसी दूसरे एडवोकेट के पास गया और उससे बात की। उसने वह केस हाथ में ले लिया और उस आदमी को बचा भी लिया।

वह आदमी फिर गांधी जी के पास आया और कहा – मोहनदास जी, आपने तो मेरा केस नहीं लिया, किंतु अमुक एडवोकेट ने लिया और मुझे पार भी लगा दिया। हालांकि पैसा मुझे काफी देना पड़ा।

गांधी जी ने बड़े मार्मिक शब्दों में कहा – तुमने केवल पैसा ही नहीं दिया, ईमानदारी की सम्पत्ति भी साथ में दे दी।

आचार्य महाश्रमण

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

जैन विश्व भारती कामधेनु

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती की एक महत्वपूर्ण कड़ी है - समण संस्कृति संकाय। गणाधिपति तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का यह दृढ़ अभिमत था कि जब तक ज्ञानाराधना, जैन विद्या, जैन दर्शन एवं जैन संस्कृति का पक्ष मजबूत नहीं होगा तब तक समाज के विकास की दिशा एकपक्षीय होगी। उनका यह चिंतन था कि ज्ञान और संस्कार देने का श्रीगणेश बालपीढ़ी से करके क्रमशः आगे बढ़ा जाए तो स्थाई व सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

पूज्यवरों के इंगितानुसार समाज के प्रत्येक उम्र के व्यक्तियों में जैन विद्या की मूलभूत जानकारी हो, बाल-पीढ़ी समुचित संस्कारों से परिपुष्ट हो, जैन विद्या और जैन दर्शन का क्रमिक ज्ञान करवाकर उनका मूल्यांकन हो – इस दृष्टि से सन् 1977 में जैन विश्व भारती में समण संस्कृति संकाय की स्थापना की गई। विगत 35 वर्षों से समण संस्कृति संकाय जैन विद्या के विकास एवं विस्तार के पुनीत कार्य में संलग्न है। जैन विद्या परीक्षा के माध्यम से समण संस्कृति प्रत्येक आयु एवं वर्ग के व्यक्ति में जैन धर्म और जैन दर्शन के संस्कारों का सिंचन कर रहा है। इस समय संकाय द्वारा निम्नलिखित गतिविधियां संचालित की जा रही हैं –

जैन विद्या परीक्षा

आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के देशव्यापी प्रचार-प्रसार एवं बाल-पीढ़ी में शिक्षा, संस्कार व सर्जनात्मक जीवन जीने की कला जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्य को लेकर समण संस्कृति संकाय पिछले 35 वर्षों से जैन विद्या की परीक्षाएं आयोजितक रर हाहै ।ब ाल-पीढ़ीके स ाथस ाभीस तरके ल ोगोंम ेंज्ञ ानाराधनाए वंउ सकेम ूल्यांकनके ि लए परीक्षाओं के माध्यम से प्रारंभ किया गया यह सिलसिला समयानुसार परिमार्जित होकर निरन्तर वर्धमान होता रहा है। अलग-अलग कक्षाओं के अलग-अलग नाम, पाठ्यक्रम निर्धारित कर नौ वर्षीय पाठ्यक्रम बनाया गया है, जिसमें प्रवेशिका, विशारद, रत्न तथा विज्ञ की परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। इस नौ वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रारंभ से लेकर अब तक समय-समय पर यथा-अपेक्षित परिवर्तन एवं संशोधन होता रहा है।

समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित नव वर्षीय पाठ्यक्रम का मूल ध्येय बाल-पीढ़ी में मूलभूत संस्कारों का बीजारोपण करना, जैन धर्म के प्रति अपनत्व भाव जागृत करना एवं जैन विद्या के प्रखर विद्वान तैयार करना है। इन परीक्षाओं में जैन एवं जैनेतर समुदाय के सभी आयु वर्ग के लोग भाग ले रहे हैं। परीक्षाएं आयोजित करने के लिए प्रतिवर्ष संपूर्ण भारत व नेपाल में जैन विद्या परीक्षा केन्द्र स्थापित किए जाते हैं एवं लगभग 240 केन्द्रों पर परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं, जिनमें हजारों की संख्या में समाज के बालक-बालिकाएं भाग लेते हैं। इन परीक्षाओं के संचालन हेतु केन्द्र व्यवस्थापकों की नियुक्ति की जाती है जो केन्द्रों के सुसंचालन का दायित्व ग्रहण करते हैं।

समण संस्कृति संकाय प्रतिवर्ष परीक्षाओं में अव्वल एवं उच्च स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहित करता है एवं प्रतिवर्ष दीक्षान्त समारोह का आयोजन करके विद्यार्थियों को सम्मान तथा पुरस्कार प्रदान करता है। समय-समय पर विशेष बुलेटिनों, पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा समाज को आह्वान भी किया जाता है। इस संकाय के द्वारा चल विजयोपहार योजना, पर्यवेक्षक योजना, विशेष सम्मान पदक व प्रशस्ति पत्र आदि योजनाओं का आयोजन किया जाता है। विद्यार्थियों में सृजनात्मक शक्ति के विकास हेतु अन्य अनेक प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं।

जय तिथि पत्रक प्रकाशन

समण संस्कृति संकाय के द्वारा सन् 1979 से निरंतर तेरापंथ धर्मसंघ के वार्षिक आयोजन 'मर्यादा-महोत्सव' के अवसर पर 'जय तिथि पत्रक' का प्रकाशन किया जा रहा है। जन-जन के लिए उपयोगी इस जय तिथि पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, अनुष्ठानों आदि के साथ-साथ जैन विश्व भारती व विभिन्न संघीय गतिविधियों से संबंधित उपयोगी सामग्री संकलित की जाती है। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार 'तेरापंथ दर्शन मनीषी' मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' जय तिथि पत्रक के संपादन के गुरुतर दायित्व का सम्यक निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना सामग्री को जनसुलभ करवा रहे हैं।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011

अन्य गतिविधियाँ

समण संस्कृति संकाय द्वारा उपर्युक्त प्रवृत्तियों के अतिरिक्त जैन विद्या के विकास हेतु अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं, जैसे जैन विद्या कार्यशाला, जैन विद्या प्रशिक्षक कोर्स, आंचलिक संयोजक कार्यशाला आदि।

समण संस्कृति संकाय का वर्तमान स्वरूप

प्रभारी संत - 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन'
विभागाध्यक्ष - श्री रतनलाल चौपड़ा, गंगाशहर
निदेशक - श्री पन्नालाल पुगलिया, जयपुर

आज अपेक्षा इस बात की है कि आगम वाणी को जन-जन तक पहुँचाने में कार्यरत यह समण संस्कृति संकाय पूज्यवरों के आशीर्वाद के साथ अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ता रहे। जैन विद्या परीक्षाओं एवं समण संस्कृति संकाय से संबंधित अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र –

समण संस्कृति संकाय
जैन विश्व भारतीय
पोस्ट : लाडनूं – 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : (01581) 222025, 9785029131, फैक्स : 223280
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

समण संस्कृति संकाय : आचार्यों के श्रीमुख से

जैन धर्म को अच्छी तरह जानने के लिए जैन तत्व दर्शन और इतिहास को जानना आवश्यक है। यह सब जानकारी समण संस्कृति संकाय द्वारा चलाई जा रही जैन विद्या परीक्षाओं से की जा सकती है। जैन कहलाने वाले यह सब नहीं कर पाए तो उनके जीवन में भूल रह जाएगी।

आचार्य तुलसी
24 अक्टूबर 1993, राजलदेसर

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय के द्वारा बहुत बड़ा कार्य हो रहा है। यह कार्य संस्कार निर्माण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। तत्त्वज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों की विवेक-चेतना के जागरण की दृष्टि से भी सघन कार्य किया जाए तो विद्यार्थी अच्छे इंसान के रूप में तैयार हो सकते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ
26 अक्टूबर 2005, दिल्ली

जैन विश्व भारती की अनेक गतिविधियों में एक सक्षम और ठोस गतिविधि है समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित जैन विद्या पाठ्यक्रम और परीक्षाएं। संकाय द्वारा यह कार्य वर्षों से किया जा रहा है और कितने-कितने विद्यार्थियों को उससे उपकृत और लाभान्वित होने का अवसर मिला है, मिल रहा है। केवल तेरापंथ जैन ही नहीं, जैनेतर लोग भी इस उपक्रम से लाभान्वित हो सकते हैं।

आचार्य महाश्रमण
1 अक्टूबर 2011, केलवा

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011

समण संस्कृति संकाय के अब तक आयोजित दीक्षांत समारोह की झलकियाँ

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती में तिमाही के दौरान विभिन्न गतिविधियाँ

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर में इस तिमाही में बच्चों के बौद्धिक एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। बालकों को आत्मरक्षण एवं स्वसुरक्षा के लिए ताइक्वांडो का प्रशिक्षण दिया गया एवं प्रतियोगिता आयोजित की गई।

रक्षाबंधन के पर्व पर विद्यार्थियों के बीच राखी बनाने की कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी कला का सुंदर प्रदर्शन कर आकर्षक एवं मनोहारी हस्तनिर्मित राखियां बनाईं।

विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन भी खूब धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर बच्चों ने विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों और देशभक्तों की पोशाक पहनकर भारत के विभिन्न राज्यों के लोकनृत्यों – भांगड़ा, घूमर, लावनी, डांडिया आदि की आकर्षक प्रस्तुति दी और उनके माध्यम से दर्शकों में देशभक्ति की भावना पैदा की।

उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर में बच्चों के उत्साहवर्धन एवं मनोरंजन के लिए रेन डांस, नृत्य प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई एवं उन्हें भ्रमण हेतु अक्षरधाम मंदिर ले जाया गया।

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर

इस अवधि में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर में अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमें मुख्यतः विद्यालय में 15 जुलाई, 2011 को नए छात्र-छात्राओं का स्वागत समारोह पूरे उत्साह व उमंग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पुराने विद्यार्थियों ने नवागन्तुक विद्यार्थियों का स्वागत किया तथा विद्यालय के अध्यापकों ने उन्हें आशीर्वाद देकर यह कामना की कि वे अपने ज्ञान, आचार और व्यवहार से विद्यालय की शोभा बढ़ाएंगे। इस स्वागत समारोह में विद्यार्थियों को मिठाई व तोहफे वितरित किए गए।

इसके अतिरिक्त स्कूल में समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ स्वतंत्रता दिवस, शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस पर भी कार्यक्रम आयोजित किए गए।

जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय युवक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 1 से 21 अगस्त, 2011 के दौरान किया गया। कार्यशाला की समाप्ति के बाद समण संस्कृति संकाय द्वारा 21 अगस्त, 2011 को देश के 49 केन्द्रों पर इसकी परीक्षा आयोजित की गई।

प्रगति पदचिह्न

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

जैन विश्व भारती कामधेनु

'सुखी बनो' पुस्तक लोकार्पण समारोह

आचार्य श्री महाश्रमण की श्रीमद्भागवत् गीता एवं उत्तराध्ययन पर आधारित नवीन कृति 'सुखी बनो' का विमोचन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत के द्वारा हुआ। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि दोनों परंपराओं के प्रतिनिधि ग्रंथों में अध्यात्म के अनेकानेक रहस्य हैं जो मानव उत्थान में सहायक बन सकते हैं। मोहन भागवत ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य महाश्रमण की 'सुखी बनो' पुस्तक पठनीय ही नहीं, अपितु आचरणीय भी है। इस पुस्तक के पाठकों को बौद्धिक ज्ञान तो होगा ही साथ ही आत्मा की अनुभूति का भी अहसास होगा। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने प्रकाशित पुस्तक की प्रथम प्रति आचार्यप्रवर को भेंट की।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

इस तिमाही के दौरान जैन विश्व भारती द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गईं :

	पुस्तक का नाम	लेखक
01.	चौबीसी	जयाचार्य
02.	जैन तत्व विद्या खण्ड 2-3	आचार्य तुलसी
03.	जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका	आचार्य तुलसी
04.	सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण	आचार्य तुलसी
05.	नंदी	आचार्य तुलसी / आचार्य महाप्रज्ञ
06.	जीव-अजीव	आचार्य महाप्रज्ञ
07.	लोकतंत्र : नया व्यक्ति, नया समाज	आचार्य महाप्रज्ञ
08.	साधना और सिद्धि	आचार्य महाप्रज्ञ
09.	जैन परम्परा का इतिहास	आचार्य महाप्रज्ञ
10.	परिवार के साथ कैसे रहें	आचार्य महाप्रज्ञ
11.	सुखी बनो	आचार्य महाश्रमण
12.	संवाद भगवान से : भाग - 1	आचार्य महाश्रमण
13.	संवाद भगवान से : भाग - 2	आचार्य महाश्रमण
14.	आओ हम जीना सीखें	आचार्य महाश्रमण

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011

	पुस्तक का नाम	लेखक
15.	Let us Learn to Live	Acharya Mahashraman
16.	जैन धर्म : एक परिचय	मुनि दुलहराज
17.	आगम संपादन की यात्रा	मुनि दुलहराज
18.	चित्रलेखा	मुनि दुलहराज
19.	Epitome of Jainism	Muni Dulahraj
20.	जैन विद्या भाग - 1	मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन'
21.	जैन विद्या भाग - 2	मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन'
22.	जैन विद्या भाग - 3	मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन'
23.	जैन विद्या भाग - 4	मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन'
24.	यह है जीने की कला	मुनि किशनलाल
25.	जीवन विज्ञान : भाग - 1	मुनि किशनलाल
26.	Jeevan Vigyan : A Guide of Teachers Training	Muni Kishanlal
27.	आचार्य महाश्रमण : जीवन परिचय	साध्वी सुमतिप्रभा

तेरापंथी शिक्षण संस्थान प्रतिनिधि सम्मेलन

जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूं एवं आचार्य महाश्रमण चातुर्मास, व्यवस्था समिति के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 17-18 अगस्त, 2011 को आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य एवं प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी के निर्देशन में तेरापंथी शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में समागत संभागियों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि तेरापंथ समाज द्वारा संचालित विद्यालय एकरूपता रखते हुए विकास करें ताकि उनकी एक अलग पहचान बन सके। तेरापंथ समाज द्वारा संचालित विद्यालय ऐसे संस्कार केन्द्र बनें जो जीवन-विज्ञान के साथ-साथ जैन धर्म व दर्शन की भी शिक्षा प्रदान करें। 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी ने अनेक रोचक उदाहरणों से जीवन-विज्ञान की सार्थकता सिद्ध करते हुए इसे तेरापंथी विद्यालयों में पूर्ण मनोयोग से लागू करने का आह्वान किया। मुनिश्री किशनलालजी ने आचार्यप्रवर द्वारा अपेक्षित कार्यों को तेरापंथी विद्यालयों में लागू करने का विश्वास दिलाया। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री मोहजीतकुमारजी ने किया।

प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन

प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउण्डेशन के द्वारा 'तुलसी अध्यात्म नीडम्' में तीन प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन 3 जुलाई से 6 अगस्त, 2011 के दौरान, 24 से 31 अगस्त, 2011 के दौरान एवं 11 से 18 सितंबर, 2011 के दौरान किया गया। इन शिविरों में शिविरार्थियों को मुनिश्री के निर्देशन में नियमित आसन, प्राणायाम, यौगिक क्रियाएं एवं प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोगों का अभ्यास करवाया गया। प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी ने शिविर के संभागियों को पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान के नियमित प्रयोग से आन्तरिक सौन्दर्य एवं आत्मलीनता का लक्ष्य प्राप्त होता है, साथ ही शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक स्वास्थ्य में सुधार होता है। प्रेक्षाध्यान के इन शिविरों में शिविरार्थियों को कायोत्सर्ग, अंतर्यात्रा, अनुप्रेक्षा, लेश्याध्यान आदि के प्रयोग मुनिवृंद, समणीवृंद एवं प्रेक्षा साधकों द्वारा करवाए गए। शिविरार्थियों ने अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए अपनी पूरी शक्ति व समय को प्रेक्षाध्यान के विकास में नियोजित करने का संकल्प लिया।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011

जैन विश्व भारती की 40वीं साधारण सभा संपन्न

जैन विश्व भारती की 40वीं वार्षिक साधारण सभा दिनांक 24 सितंबर 2011 को केलवा में पूज्यप्रवरों के दिशा निर्देशन में एवं अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया की अध्यक्षता में आयोजित हुई। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से वार्षिक साधारण सभा प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने पूज्यप्रवरों एवं चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का स्वागत किया तथा इस कार्यकाल के प्रथम वर्ष की उल्लेखनीय गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर अपनी पूरी टीम, अनुदानदाताओं एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। ट्रस्ट बोर्ड की ओर से श्री रणजीतसिंह कोठारी ने सभी का स्वागत कर सहयोगियों को धन्यवाद दिया।

जैन विश्व भारती के मंत्री श्री जितेन्द्र नाहटा ने 39वीं वार्षिक साधारण सभा की कार्यवाही का वाचन कर वर्ष 2010-11 की वार्षिक गतिविधियों का मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। कोषाध्यक्ष श्री पारस बोहरा ने 2010-11 के वित्तीय वर्ष से संबंधित आय-व्यय विवरण एवं वार्षिक चिट्ठे की प्रस्तुति दी, जिसे सदन ने स्वीकृति प्रदान की।

वार्षिक साधारण सभा से पूर्व कुछ विशेष मुद्दों के साथ जैन विश्व भारती की विशेष साधारण सभा भी आयोजित की गई। ज्ञातव्य है कि इस सभा में जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों, ट्रस्टीगणों, संचालिका समिति के सदस्यों, परामर्शक मण्डल के सदस्यों एवं अन्य सदस्यों की सक्रिय सहभागिता रही। सभा में लगभग 80 लोगों की उपस्थिति रही।

गणेश नाईक को 'अणुव्रत मित्र' पुरस्कार

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में केलवा में जैन विश्व भारती द्वारा दिनांक 10 जुलाई 2011 को महाराष्ट्र राज्य के उत्पाद शुल्क, कारागार एवं पर्यावरण मंत्री श्री गणेश नाईक को 'अणुव्रत मित्र पुरस्कार' प्रदान किया गया। श्री नाईक को पुरस्कार स्वरूप ढाई लाख रुपये की राशि, प्रतीक चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र जैन विश्व भारती के ट्रस्टी श्री रणजीत कोठारी एवं अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने भेंट किया। श्री गणेश नाईक ने तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ को एक विशिष्ट धर्मसंघ के रूप में व्याख्यायित किया। पुरस्कार प्रदान करने हेतु श्री नाईक ने जैन विश्व भारती के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और पुरस्कारस्वरूप प्राप्त राशि को जैन विश्व भारती को लौटाते हुए कहा कि जैन विश्व भारती मानवता के कल्याण के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जिस निष्ठा के साथ कार्य कर रही है, उसके लिए इस राशि की विशेष आवश्यकता है।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

विदेश स्थित केन्द्रों की विभिन्न गतिविधियाँ

ह्यूस्टन सेन्टर

जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेन्टर में इस त्रैमासिक अवधि में समणी अक्षयप्रज्ञाजी एवं समणी परिमलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में निम्नांकित धर्मप्रभावक कार्यक्रम आयोजित किए गए : -

संस्कार निर्माण शिविर

बच्चों में संस्कारों की नींव मजबूत करने एवं उनमें नैतिक व धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करने के उद्देश्य से चार दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें योगासन एवं पाचनतंत्र एवं अस्थितंत्र के बारे में जानकारी दी गई। खेल-खेल में बोध (Learn with fun) के माध्यम से समणी परिमलप्रज्ञाजी ने बच्चों को स्मृति विकास के सूत्र सिखाएं। कठपुतली के कार्यक्रम के द्वारा बच्चों को धूम्रपान से होने वाली हानियों की जानकारी दी गई और उन्हें नशा न करने का संकल्प दिलाया गया। इस शिविर के आयोजन में प्रतिमा, अलिस, हंसा, सुधा, विजिया, पायल, नुपूर आदि का सक्रिय सहयोग रहा।

मिनियापोलिस में प्रेक्षाध्यान शिविर

समणी अक्षयप्रज्ञाजी एवं समणी परिमलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में मिनियापोलिस (अमेरिका) में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 50 लोगों ने भाग लिया। इस शिविर में शिविरार्थियों को यौगिक क्रियाओं, आसन-प्राणायाम, ध्यान के चार चरण, मंत्र, जप, कायोत्सर्ग आदि के प्रयोग करवाए गए। समणीद्वय द्वारा जीवनोपयोगी विषयों पर व्याख्यान दिए गए, जैसे -- How to live good life, Awareness is the key of success, Stress Management, Why did good people suffer, Non-violent communication आदि।

तनाव प्रबंधन कार्यशाला

जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेन्टर, आई.सी.सी. और सेवा इंटरनेशनल के संयुक्त तत्वावधान में जैन विश्व भारती के प्रांगण में तनाव प्रबंधन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें ह्यूस्टन के जाने-माने कार्डियोलोजिस्ट डॉ. निक निकम प्रमुख वक्ता थे। समणी अक्षयप्रज्ञाजी ने पावर प्वायंट प्रस्तुति देते हुए तनाव के प्रकार, प्रभाव और प्रादुर्भाव की स्थितियों पर प्रकाश डाला। तनाव मुक्ति के लिए समणीजी ने ध्यान, कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, मंत्र जप, मुद्रा आदि के प्रायोगिक अभ्यास भी करवाए।

पर्युषण महापर्व की आराधना

समणी अक्षयप्रज्ञा एवं समणी परिमलप्रज्ञा के निर्देशन में ह्यूस्टन में पर्युषण महापर्व की आराधना सानंद संपन्न हुई। पर्युषण के आठ दिनों के दौरान महावीर जीवन दर्शन, अन्तकृत दशा का वाचन एवं अन्य उपयोगी विषयों,

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

जैसे - Why we celebrate Paryushan, Paushadh - A Journey of Purification, Self-Realization, What are Sins, Why do people commit sins आदि पर व्याख्यान भी हुए। प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र के जप एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों का क्रम चला। पर्युषण के दौरान तपस्या का क्रम भी अच्छा चला। सभी आयु वर्ग के लोगों ने तपस्या, एकासन कर कर्म-निर्जरा की। समणीद्वय के सान्निध्य में पर्युषण पर्व की आराधना अभूतपूर्व रही।

लंदन सेन्टर

इस त्रैमासिक अवधि में जैन विश्व भारती के लंदन सेन्टर में समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी एवं समणी विकासप्रज्ञा के निर्देशन में अनेक धर्मप्रभावक कार्यक्रम आयोजित हुए। इन कार्यक्रमों की श्रृंखला में मुख्यतः An Integrated Personality by Bowing Reverence विषय पर व्याख्यान दिया गया, बेलमंट कम्युनिटी हॉल में महिला स्वास्थ्य पर आधारित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया तथा पर्युषण पर्व पर युवाओं के लिए विशेष कार्यक्रम रखा गया।

इस अवधि में समणीवृंद का प्रवास ज्युरिक, बर्न, जेनेवा आदि स्थानों पर भी हुआ, जहां जैन दर्शन और प्रेक्षाध्यान विषय पर कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त ज्ञानशाला के द्वारा भी लंदन सेन्टर में बच्चों में जैन संस्कारों के विकास संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

न्यूजर्सी सेन्टर

जैन विश्व भारती के न्यूजर्सी सेन्टर में समणी जयन्तप्रज्ञाजी एवं समणी सन्मतिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में इस अवधि में अनेक धर्मप्रभावक कार्यक्रम हुए। इन दौरान समणीजी ने न्यूजर्सी के आस-पास के स्थानों पर प्रेक्षाध्यान जैन जीवन शैली, जैन दर्शन आदि पर व्याख्यान दिए।

ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव

समणीवृंद के सान्निध्य में ज्ञानशाला के बच्चों का वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर ज्ञानार्थियों ने

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

अहिंसा के प्रयोग अपने विद्यालय में, मित्रों के साथ अहिंसा, परिवार में अहिंसा का प्रयोग, पर्यावरण की सुरक्षा आदि विषयों पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए। साथ ही बच्चों के लिए परिवार विषयक पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय 'सुखी एवं सामंजस्यपूर्ण परिवार' रखा गया था। इसके अतिरिक्त अनेक धार्मिक व शिक्षाप्रद प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई जिसमें सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

पर्युषण पर्व आराधना

समणी जयन्तप्रज्ञाजी एवं समणी सन्मतिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में न्यूजर्सी में पर्युषण पर्व की आराधना बड़े ही धूमधाम से की गई। प्राकृतिक आपदाओं के व्यवधान के बावजूद प्रतिदिन उपस्थिति बढ़ती रही। समणीवृंद द्वारा महावीर के जीवन दर्शन एवं आध्यात्मिक प्रवचनों की नई शैली में प्रस्तुति से लोगों में प्रतिदिन आकर्षण बढ़ता रहा। संसार की अत्याधुनिक साधना के प्रयोग के कारण प्रतिक्रमण और दैनिक प्रवचन का प्रसारण अन्य क्षेत्रों में भी हुआ। पर्युषण एवं दक्ष लक्षण पर्व के दौरान समणीवृंद के नियमित प्रवचन स्थानीय जैन सोसायटी ऑफ सेन्ट्रल न्यूजर्सी में हुए। धर्म प्रभावना की दृष्टि से यह कार्यक्रम विशेष महत्वपूर्ण रहा।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला

न्यूजर्सी सेन्टर पर समण सिद्धप्रज्ञ एवं निर्मल कुमार नौलखा के आगमन पर समणीवृंद के निर्देशन में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निर्मल नौलखा ने जैन जीवन शैली एवं समण सिद्धप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के विविध आयामों पर प्रकाश डाला और विभिन्न प्रयोग करवाएं। इस अवसर पर आचार्य भिक्षु के नाम का सामूहिक जप करवाया गया। अमेरिका में यह प्रथम अवसर था कि जब सार्वजनिक रूप से भिक्षु का जप करवाया गया।

जीने की कला

आचार्य महाश्रमण

जिस व्यक्ति के जीवन में अर्थ, काम और धर्म -- ये तीनों हैं, तब तो उसका जीवन संतुलित है। यदि अर्थ और काम के साथ धर्म का योग नहीं है तो उस आदमी के दिन बीत जाते हैं परंतु वह आदमी जीवित आदमी नहीं है। एक कवि ने एक व्यावहारिक उदाहरण दिया है कि जैसे लुहार की धौंकनी संकुचित और विकुचित होती रहती है, वह फैलती और सिकुड़ती रहती है, परंतु संकोच-विकोच होने मात्र से उसे सप्राण नहीं कहा जा सकता। इसी तरह आदमी श्वास लेता है और छोड़ता है, जिससे पेट फूलता है और सिकुड़ता है किंतु पेट के फूलने और सिकुड़ने मात्र से आदमी को सप्राण नहीं कहना चाहिए। आदमी सप्राण तभी है, जब उसके जीवन में धर्म का योग हो, अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश हो। जीना एक बात है और तरीके से जीना अलग बात है। हम तरीके से जीना सीखें। चलना कैसे चाहिए, बोलना कैसे चाहिए, खाना कैसे चाहिए, पढ़ना कैसे चाहिए, सुनना कैसे चाहिए, सोचना कैसे चाहिए आदि बिंदुओं पर चिंतन करें। हमारे जीवन की जो क्रियाएँ हैं, व्यवहार हैं, उनमें कलात्मकता आ जाए, संयम आ जाए, समता आ जाए और तरीका ठीक हो जाए तो मानना चाहिए कि हमें जीवन की कला आ गई।

कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

पुस्तक समीक्षा

उदात्त जीवन का उत्तुंग सोपान

डॉ. शम्भु प्रसाद
एम.ए.; बी.एड.; पीएच.डी.
अध्यक्ष, प्रतिध्वनि (साहित्यिक संस्था), कोलकाता
संपादक 'दिशा' (साहित्यक पत्रिका), कोलकाता
सदस्य-सचिव, न. रा. का. स., बैंक, कोलकाता

***आचार्य महाश्रमण** भारतीय मनीषा के एक ऐसे प्रज्ञाता हैं, जिनमें अध्यात्म एवं विज्ञान का मणिकांचन संयोग है। वे उन महान संत-विचारकों में से एक हैं, जिन्होंने आत्मा के दर्शन को न केवल व्याख्यायित किया है, बल्कि अपने जीवन में आचरित भी किया है।*

आचार्य महाश्रमण सभी धर्मों, संप्रदायों, जाति, वर्ग एवं समुदाय के लोगों को समान रूप से जीवन के अनुभूत सत्यों से समान रूप से अवगत कराते हैं।

वे प्रतिभा संपन्न, आत्मज्ञानी और मौलिक चिंतक हैं। अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के उत्थान के लिए समर्पित आचार्य महाश्रमण अपनी आप्त वाणी से मानव जीवन को नई दिशा और नया मंत्र प्रदान कर रहे हैं।

आचार्य महाश्रमण की प्रमुख कृतियाँ

1. *आओ हम जीना सीखें*
2. *क्या कहता है जैन वाङ्मय*
3. *दुःख मुक्ति का मार्ग*
4. *संवाद भगवान से*
5. *महात्मा महाप्रज्ञ*
6. *धम्मो मंगलमुक्कट्ठं*

हमारे देश में आज भी सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं में हो रहे परिवर्तनों के मूल में अध्यात्म एवं अध्यवसाय का अत्यंत महत्व है। जन्म-मरण-अस्तित्व के गूढ़ प्रश्नों से जूझने का जोखिम वही व्यक्ति उठाते हैं, जिन्होंने भारतीय मनीषा की विभिन्न अवधारणाओं को आत्मसात किया है। आज हमारे जीवन से जहाँ आत्मीय रिश्ते भी विरल होते जा रहे हैं, ऐसे संक्राति काल में हम सभी के लिए श्रीमद्भगवद्गीता एवं उत्तराध्ययनसूत्र तथा प्राचीन विभिन्न धर्मग्रंथों में निहित मर्म बहुत ही श्रेयस्कर हैं। इसी अध्ययन एवं मर्म विवेचन की श्रृंखला में आचार्य महाश्रमण के प्रवचनों/वक्तव्यों का संकलन '**सुखी बनो**' अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय पुस्तक के रूप में सामने आई है। जीवन की आपा-धापी से त्रस्त वर्तमान मानवीय जन-संसार जिस अंधभौतिकता के पीछे दौड़ रहा है, उसमें अधःपतन की संभावनाएँ सर्वत्र विद्यमान हैं। जीवन को मरणासन्न बनाने में आज की दैहिक-दैविक-भौतिक तापत्रयी की भूमिका से हर व्यक्ति एवं समाज त्रस्त है। ऐसे में आचार्य महाश्रमण जी का सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत मार्मिक एवं तात्विक विवेचन हमारे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में संजीवनी का कार्य करेगा।

यह संसार मानवता की सरजमीन पर टिका हुआ है, जिसमें ज्ञान-अज्ञान, हिंसा-प्रतिहिंसा, राग-द्वेष, दया-करुणा आदि समस्त प्रवृत्तियों से मनुष्य बंधा हुआ है। आचार्य श्री महाश्रमण ने महान ग्रंथों के गूढ़ रहस्यों का साधिकार विवेचन करते हुए अपने प्रवचनों के माध्यम से हमें निष्काम कर्म के लिए प्रेरित किया है। उनके प्रवचन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य की पूर्णता है। इस पुस्तक में कुल 41 शीर्षकों में प्रवचनों को संकलित किया गया है जिसे हम गागर में सागर भरने जैसा श्रम कह सकते हैं। आचार्यश्री के प्रवचनों से हमें अपने संसारी जीवन को अनुशासित, समतामय, निष्काम, स्थितप्रज्ञ, कर्तव्यमय, पुरुषार्थी एवं भावशुद्ध करने के साथ-साथ राग-द्वेष मुक्त बनाने में सफलता मिलेगी। हमारे जीवन की तीन महत्वपूर्ण चीजें – इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि इस महान ग्रंथ के अध्ययन से सचेतन रहेंगी।

प्राप्ति स्थान : **जैन विश्व भारती**, *पोस्ट* - लाडनूँ - 341306, *जिला* - नागौर, राजस्थान, *फोन* : (01581) 222080/224671
मूल्य : 60/-

कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन कृति
Transform Your Self

आध्यात्मिक चेतना को जगाने वाली पुस्तक

प्रस्तुति - समणी विनयप्रज्ञा

सुबह से शाम तक, भीतर से बाहर तक चारों ओर सम्पूर्ण जगत में हमें नजर आती है अस्थिरता, परिवर्तनशीलता। परिवर्तनशील मौसम, परिवर्तनशील स्वभाव और परिवर्तनशील व्यक्तित्व। अस्थिर जगत में न हम स्वयं को स्थिर बना पा रहे हैं और न आस-पास के वातावरण को। सुनहरी भोर के समय हमारा स्वभाव शांत और सौम्य होता है, तो तपती दोपहर में तप्त हो जाता है, शांतमुखी ज्वालामुखी बन जाता है। कभी प्रेम तो कभी घृणा, कभी उत्साह तो कभी निराशा, कभी क्रोध तो कभी क्षमा। जब तक हमारे भाव और विचार स्थायी नहीं बनते, स्वयं पर अनुशासन या नियंत्रण कैसे संभव है?

आचार्य महाप्रज्ञ एक मनोवैज्ञानिक-दार्शनिक आचार्य थे, जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय प्रेक्षा ध्यान के द्वारा मानव स्वभाव के रहस्यों को समझने में लगाया। उनकी लगभग 35 वर्ष पूर्व लिखी गई पुस्तक 'आभामंडल',ज ाेअ ाजभ ील ाेकप्रियहै ,उ नप ाठकोंके ब ीचज ाेध यानके द्व ारास् वयंक ेब ादलनाच ाहतेहैं , अपने जीवन को शांत व व्यक्तित्व को स्थिर बनाना चाहते हैं। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद 'Transfom Your Self' के नाम से अतिशीघ्र आप लोगों के मध्य आने जा रहा है। इस पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं – अनेगचित्ते खलु अयं पुरिसे - व्यक्ति अनेक चित्र वाला है। यह बहुचित्तता किसी जादू का परिणाम नहीं, अपितु मनुष्य का अपना स्वभाव है। मनुष्य के भावों में परिवर्तन से भीतरी और बाहरी दोनों दुनिया परिवर्तित हो जाती है, आभामंडल रूपांतरित हो जाता है। शुभ भावों से आभामंडल पवित्र बनता है और अशुभ भावों से आभामंडल दूषित होता है। अस्थिर भावों से हमारा व्यक्तित्व भी चंचल बन जाता है। अस्थिर प्रश्न होता है, आखिर हमारा वास्तविक व्यक्तित्व क्या है? हमारा व्यक्तित्व भी कौन-सा है? हम चाहकर भी अच्छे व्यक्तित्व, स्वभाव और आदतों का निर्माण क्यों नहीं कर पाते?

यह पुस्तक है – इन प्रश्नों का समाधन। इसमें आचार्यश्री ने सुंदर विधियों और प्रयोगों के द्वारा बताया है कि हम अपने मूल स्वरूप को कैसे जाने, अपने भावात्मक परिवर्तन और नकारात्मक ऊर्जा को कैसे पहचाने? अपनी जागरूकता कैसे बढ़ाएं? ध्यान के द्वारा हम अपने तनाव, भय, चिंता आदि नकारात्मक भावों को बदल सकते हैं। भीतरी जगत के रहस्य की सूक्ष्म और सरल व्याख्या इस पुस्तक की विशेषता है, जो पाठकों को उत्सुक बना देती है - स्वयं की अदृश्य और अनजानी दुनिया को जानने, पहचानने और समझने के लिए। इसके साथ-साथ 'लेश्या-ध्यान' – रंगों के ध्यान के द्वारा उलझे स्वभाव को सरलता से सुलझाने के सुंदर उपाय इस पुस्तक का आकर्षण है।

अध्यात्म के शिखरपुरुष आचार्य महाप्रज्ञ का प्रमुख लक्ष्य था पाठकों के भीतर छिपी आध्यात्मिकता को जगाना, अपनी शक्ति, शांति और उच्च चेतना के अस्तित्व को पहचानने व प्राप्त करने में मदद करना।

अस्तु, यह पुस्तक 'Transform Your Self' आज की युवा पीढ़ी तथा अंग्रेजी भाषी पाठकों के लिए बहुत बड़ा मार्गदर्शक बनेगी, जीवन में स्थिरता व शांति का विकास करेगी तथा आध्यात्मिक चेतना को उजागर करेगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

प्रकाशन : **हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया**
पुस्तक प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र : **जैन विश्व भारती**, *पोस्ट* - लाडनूँ - 341306,
जिला - नागौर, राजस्थान, *फोन* : (01581) 222080/224671
मूल्य : 299/-

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

जैन विश्व भारती द्वारा संचालित सप्त सकारों के अधीन साधना के संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ का एक विचार-प्रधान आलेख।

नए जीवन का निर्माण

आचार्य महाप्रज्ञ

जीवन के नव-निर्माण की प्रक्रिया का पहला सूत्र होगा — अपना बोध। इसका अर्थ है अपने को जानना और अपने आपको पहचानना। दुनिया की बहुत सारी बातों को जानने वाला आदमी अपने आपसे बिलकुल अनजान है। दूसरों को पहचानने वाला अपने को नहीं पहचान पा रहा है। अपने भीतर क्या है, उसे पता नहीं है। बाहर की दुनिया में सुख भी है दुःख भी है, अच्छा भी है, बुरा भी है, प्रिय भी है, अप्रिय भी है। ज्ञान है, सामर्थ्य है, सारी बातें हैं। क्या ये अपने भीतर नहीं हैं? जितनी चीजें बाहर हैं, उतनी चीजें अपने भीतर हैं। भीतर का संसार बाहर के संसार से छोटा नहीं है। भीतर में सुख भी है, दुःख भी है, शांति भी है, अशांति भी है। शक्ति भी है और दुर्बलता भी है। सारी बातें अपने भीतर हैं, किंतु हमभ ीतरक ीब ातोंस ेि बलकुलअ नजानहैं ।ब ाहरम ेंश ांतिहै इ सकाह मेंअ हसासह ोताहै ि कंतुभ ीतरम ेंश ांतिहै इसका पता हमें नहीं चलता।

बाहर की दुनिया को जानने के नियम अलग हैं, भीतर की दुनिया को जानने के नियम अलग हैं। जब तक हम नियमों को नहीं जान लेते तब तक भीतर को नहीं जान सकते। भीतर की दुनिया को जानने का नियम है आँख मूंदकर देखना।

बिलकुल शांत वातावरण। शिथिलीकरण। कायोत्सर्ग की मुद्रा। शरीर को ढीला छोड़ देना। प्रवृत्तियों को बन्द कर देना, इन्द्रियों का संयम कर लेना, न आँख से देखने का प्रयत्न, न कान से सुनने का प्रयत्न। सुनाई देता रहे पर प्रयत्न न रहे। न कुछ चखने का प्रयत्न, न कुछ छूने का प्रयत्न, इन्द्रियों का कोई प्रयत्न नहीं। इन्द्रियों का अप्रयत्न, शरीर का भी अप्रयत्न, मन का अप्रयत्न यानी प्रयत्न से अप्रयत्न की दिशा में प्रस्थान।

इसके लिए काया की गुप्ति, वचन की गुप्ति और मन की गुप्ति करनी होती है। मन, वचन और काया – तीनों का संयम करना होता है। श्वास को भी शांत करना होता है। श्वास भी तेज रहेगा तो अपने आपको नहीं जाना जा सकेगा।

श्वास का और हमारे भाव-संस्थान का बहुत घनिष्ठ संबंध है। भाव में उत्तेजना आई, आवेश आया, श्वास छोटा बन जाएगा, संख्या बढ़ जाएगी। आवेश शांत हुआ, श्वास की संख्या घट जाएगी। श्वास और आंतरिक व्यक्तित्व का बहुत गहरा संबंध है। श्वास शांत और मंद, शरीर कायोत्सर्ग की मुद्रा में, वाणी का संयम और मन एकाग्र, किसी चैतन्य केन्द्र पर टिका हुआ – यह स्थिति बनती है तब अपने आपको जानने का अवसर मिलता है। उस क्षण में यह अनुभव होता है कि मैं क्या हूँ और मेरे भीतर क्या है। इस स्थिति में आनन्द का अनुभव होता है, शांति का अनुभव होता है, पदार्थ-विहीन सुख का अनुभव होता है और आदमी अपने अस्तित्व को, अपने भीतर जो सम्पदा है उसको समझ सकता है, उसका अनुभव कर सकता है। उस अवस्था में बुरे विचार आते हैं तो वह समझ सकता है कि भीतर अभी तक कचरा भरा हुआ है। अच्छे विचार आते हैं तो समझ सकता है कि अच्छाइयाँ भी भरी हुई हैं। कभी दुःख का अनुभव होता है तो वह समझ सकता है कि भीतर में अभी प्रचुर संचय है। मैंने दुःखों का बहुत अर्जन किया था, अभी दुःख क्षीण नहीं हुए हैं। कभी सुख का अनुभव होता है तो वह समझ सकता है कि मैंने कुछ अच्छा भी किया है। वह विपाक में आ रहा है, प्रकट हो रहा है। अपना जो कृत है और उसका जो विपाक है उसे वह जान लेता है। यह है अपनी पहचान। जब अपनी पहचान और अपना ज्ञान होता है तो नये निर्माण का मौका मिलता है। व्यक्ति अपने आप का नया निर्माण कर सकता है और वह सोच सकता है कि जो अशुभ है, जो अनिष्ट है, जो बुरा है, उसे मैं न करूं। जो मैं करता हूँ, वह भीतर संचित रहता है और उसका विपाक मुझे भुगतना पड़ता है। उस दिशा में न जाऊँ। मैं उस दिशा में जाऊँ जहाँ यह अशांति नहीं है, दुःख नहीं है, बुरा नहीं है।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

अपनी पहचान का अर्थ है – एक नए संकल्प का जागना। जब अपनी पहचान होती है तब मिथ्यादर्शन टूटता है और सम्यक दर्शन बनता है। सम्यक दर्शन बनते ही जीवन की सारी यात्रा बदल जाती है। यात्रा का पथ बदल जाता है।

मनुष्य को जीवन की यात्रा में दो तत्त्वों का सामना करना होता है। एक है काम और दूसरा है अर्थ। अपनी पहचान से काम और अर्थ के प्रति सम्यक दर्शन हो जाता है।

हमारे भीतर न जाने कितनी कामनाएँ हैं। मनुष्य के भीतर, हर प्राणी के भीतर विभिन्न मौलिक मनोवृत्तियाँ हैं, कामनाएँ हैं। उन कामनाओं का सामना करना होता है। जब कामना की तरंगें जागती हैं, आदमी कुछ नहीं कर पाता। जब वह इनके अधीन हो जाता है तब जीवन बहुत गड़बड़ा जाता है। हमारे भीतर कामनाओं का एक संसार है।

अर्थ : अभाव और प्रभाव

दूसरा तत्त्व है अर्थ का। जीवन की यात्रा चलाने के लिए अर्थ की जरूरत है। अर्थ का जगत बड़ा है। अर्थ के बारे में हमारा दृष्टिकोण सही नहीं है। पूरे समाज का अध्ययन करें तो दो स्थितियाँ हमारे सामने आती हैं। एक स्थिति है अर्थ का अभाव। दूसरी स्थिति है – अर्थ का प्रभाव।

समाज का बहुत बड़ा ऐसा वर्ग है, जहाँ अर्थ का अभाव है और समाज का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा है, जहाँ अर्थ का प्रभाव है। दोनों स्थितियाँ अच्छी नहीं हैं। जीवन यात्रा के लिए अर्थ का अभाव होना भी अच्छा नहीं है और अर्थ का प्रभाव होना भी अच्छा नहीं है। दोनों अच्छे नहीं हैं। जहाँ अर्थ का अभाव होता है, गरीबी होती है, वहाँ जीवन का चलना मुश्किल होता है और आदमी बहुत दुःख से दिन गुजारता है। जहाँ अर्थ का प्रभाव होता है, वहाँ अति विलासिता, अति कामुकता, प्रदर्शन – ये सारी घटनाएँ होती हैं। आज भी बहुत सारी बीमारियाँ शारीरिक नहीं, मानसिक हैं, जो अर्थ के प्रभाव के कारण होती हैं।

परिणाम अर्थ के प्रभाव का

आज के संसार की सबसे कठिन समस्या यह है कि सर्वत्र अर्थ का प्रभाव है। सुविधावाद उसी से उपजा है। अर्थ का इतना प्रभाव हो गया कि व्यक्ति बिलकुल सुविधावादी बन गया। जब मन पर अर्थ का प्रभाव हो जाता है, आदमी अच्छे-बुरे का भेद भूल जाता है, लाभ और हानि को भुला देता है।

जीवन का एक नियम है — कठिनाइयों को झेलना, प्रकृति की सारी बातों को झेलना। सर्दी, गर्मी, ताप – इनको झेलते हुए एकदम मजबूत बन जाना। आज का आदमी सोचता है — कुछ सहना ही नहीं है। कष्ट नहीं सहना है। एक छोटे बच्चे को हम कपड़ों से इतना बांध देते हैं कि शरीर को जैसे कोई आंच ही न आने पाए। धीरे-धीरे उसकी सहन-शक्ति चूक जाती है और फिर वह जीवन में कष्टों से अधीर हो जाता है। आज अर्थ का प्रभाव मन पर इतना जम गया कि आदमी सोचता है, जितना आराम जीवन में भोगा जा सके, भोग लेना चाहिए। पता नहीं आगे क्या होगा, आगे मर कर कहां जाएँगे। जितना भोगना है, इसी जीवन में भोग लें।

यह अवैज्ञानिक दृष्टिकोण है। इस आर्थिक प्रभाव के कारण आदमी शारीरिक, मानसिक आदि अनेक प्रकार की यातनाएँ भोग रहा है। जब अर्थ का प्रभाव मन पर हो जाता है तो जीवन का नया निर्माण नहीं हो सकता, इसलिए अर्थ और काम के प्रति हमारा सम्यक दर्शन, सम्यक दृष्टिकोण होना चाहिए। अर्थ के प्रति सम्यक दर्शन का अर्थ है - समाज में या व्यक्ति में न अर्थ का अभाव होगा और न अर्थ का प्रभाव होगा। दोनों वांछनीय नहीं है। किन्तु अर्थ की मात्र उपयोगिता होगी। यह अर्थ का सम्यक दर्शन है।

भारतीय चिंतन में चार पुरुषार्थ बतलाये गए हैं। इनमें पहले दो हैं काम और अर्थ, अगले दो हैं धर्म और मोक्ष। जीवन के निर्माण का तीसरा सूत्र है – धर्म और मोक्ष के प्रति सम्यक दर्शन जागे। धर्म के प्रति भी हमारा दृष्टिकोण सम्यक होना चाहिए और मोक्ष के प्रति भी हमारा दृष्टिकोण सम्यक होना चाहिए।

आज कुछ ऐसा लगता है, अर्थ का प्रभाव धर्म को छू गया। अर्थ वाले जो लोग हैं वे धर्म भी, अर्थ के द्वारा ही करना चाहते हैं। बहुत कमाया और थोड़ा-सा दान-पुण्य कर दिया और स्वार्ग के लिए सीट आरक्षित हो गई। चाहे जैसे-तैसे

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

कमाये, बुरे साधनों से कमाये, दूसरे का गला काटकर कमाये पर थोड़ा-सा दान कर समझते हैं बस, सब कुछ हो गया। कभी-कभी उनसे कहा जाता है – तुम गलत ढंग से कमाते हो और थोड़ा-सा दान देकर अपने आपको धार्मिक मान लेते हो। तब उनका उत्तर होता है – कोरे कमाते ही नहीं हैं, देते भी हैं। वे देने में अटक जाते हैं। देने को धर्म मान लिया जाता है।

धर्म का धन से कोई संबंध नहीं है। अगर धन से धर्म खरीदा जायेगा तो कल धनवान लोग ही स्वर्ग में जाएँगे। गरीबों के लिए नरक तैयार है। वे वहीं जाएँगे। यह एक गलत दृष्टिकोण स्वीकृत हो गया। आज अनैतिकता को पोषण देने में यह सिद्धांत भी काम कर रहा है। धनी सोचते हैं, अगर हम बुराई से कमाते हैं तो धर्मशाला भी तो हम बनाते हैं, प्याऊ भी बनाते हैं और हॉस्पिटल भी बनाते हैं। एक गलत दृष्टिकोण बन गया कि जैसे-तैसे गलत साधनों से कमाओ और थोड़ा-सा दान देकर यह मान लो कि सिद्धि हो गई और नरक टल गया, स्वार्ग तैयार है। धर्म के साथ जहाँ त्याग और तपस्या का दृष्टिकोण जुड़ा हुआ था, वह गौण हो गया, दान और पुण्य का दृष्टिकोण मुख्य बन गया। यह एक भ्रांति बन गई।

धर्म का मतलब है – अर्थ और काम का सीमाकरण। अर्थ और काम की सीमा करना। इतने से ज्यादा अर्थ का उपयोग मैं नहीं करूंगा। इसका नाम है – धर्म। मैं गलत तरीके से अर्थ का अर्जन नहीं करूंगा, इसका नाम है – धर्म। मैं अर्थ का प्रदर्शन नहीं करूंगा, इसका नाम है – धर्म। अर्थ की सीमा करना, अर्थ का त्याग करना, इसका नाम है धर्म। इच्छा का परिमाण करना, अर्थ का परिमाण करना, हिंसा का परिमाण करना, सीमा करना। इसका नाम है – धर्म।

दूसरा है – कामना का सीमाकरण। कामनाएँ बहुत जागती हैं – यह करूं, वह करूं, यह हो जाए, वह हो जाए। कामना से तो आदमी बह जाता है। उनका सीमाकरण कर देना। इससे अधिक जो कामना आएगी उसे क्रियान्वित नहीं करूंगा, यह है धर्म।

पदार्थ का भोग करना, यह लौकिक बात है और पदार्थ का त्याग करना, यह अलौकिक बात है। धर्म हमारी वह चेतना है जिसमें पदार्थ को त्यागने की क्षमता जाग सके। बड़ी कठिन बात है पदार्थ को त्यागने की। भोगने की बात तो हर आदमी में जाग जाती है। यदि त्याग की चेतना जाग जाए तो वह अलौकिक बात है और यह अलौकिक चेतना ही धर्म है। त्याग की चेतना का जाग जाना ही धर्म है।

चौथा पुरुषार्थ है – मोक्ष। कौन-सा मोक्ष? क्या मरने के बाद मिलने वाला मोक्ष? हमने मान रखा है कि आदमी मरने के बाद ही स्वर्ग में जाएगा, मरने के बाद ही नरक में जाएगा, मरेगा तब मोक्ष में जाएगा। धर्म भी जीते जी होता है तो मोक्ष भी जीते जी ही होता है। अगर वर्तमान काल में मोक्ष नहीं होता है तो मरने के बाद कभी नहीं होता। वर्तमान जीवन में मोक्ष घटित होता है तो हम सोच सकते हैं कि मरने के बाद भी मोक्ष होगा। जो आदमी वर्तमान में नरक का जीवन नहीं जीता वह मरने के बाद नरक में नहीं जाता। जो आदमी वर्तमान में स्वर्ग का जीवन नहीं जीता वह मरने के बाद स्वर्ग में नहीं जाएगा। और जो आदमी वर्तमान में मोक्ष का जीवन नहीं जीता वह मरने के बाद भी मोक्ष में नहीं जाएगा।

यह मोक्ष अपने निर्माण का सबसे बड़ा सूत्र है। अकेलेपन के अनुभव का नाम है मोक्ष। मैं अकेला हूँ, मेरी आत्मा अकेली है, यह वास्तविक सच्चाई है। मैं अकेला आया हूँ, और अकेला जाना है, अकेले को सुख-दुःख भोगना है। वास्तव में मैं अकेला हूँ। जितने पदार्थ हैं, वे वास्तव में मेरे नहीं हैं। परिवार वास्तव में मेरा नहीं है। मैंने अपने इर्द-गिर्द मकड़ी की तरह इतने जाल बुने हैं पर वह आखिर जाल ही है। मेरा अपना कोई नहीं है। इस प्रकार पदार्थ से अपनी पृथकता का, अलगाव का अनुभव करना, इसी का नाम है – मोक्ष।

जीवन निर्माण के तीन सूत्रों में सबसे पहला सूत्र है – अपना बोध, अपनी जानकारी। दूसरा सूत्र है – काम और अर्थ के प्रति सम्यक दृष्टिकोण और तीसरा सूत्र है मोक्ष के प्रति सम्यक दर्शन। इन तीन सूत्रों का अगर अनुशीलन और चिंतन किया जाए तो जीवन का नया निर्माण संभव बन पाएगा।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया 'समाजरत्न' अलंकरण से अलंकृत

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया द्वारा धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में की गई महत्वपूर्ण सेवाओं तथा समाज एवं मानवता के कल्याण के लिए किए गए कार्यों को मूल्यांकित करते हुए समग्र जैन समाज की अखिल भारतीय संस्था 'भारत जैन महामंडल' ने मुंबई में विश्व मैत्री दिवस : क्षमापना समारोह में उन्हें विशिष्ट अलंकरण '**समाजरत्न**' से विभूषित कर सम्मानित किया। आयोजकों ने श्री चोरड़िया के महत व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी धर्मनिष्ठा, समाजनिष्ठा और मानवता के प्रति प्रगाढ़ सेवा भावना की भूरि-भूरि सराहना की। जैन धर्म के चारों संप्रदायों के प्रतिनिधि साधु-साध्वियों के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में माणिकचंद ग्रुप के चेयरमैन श्री रसिकलाल घाड़ीवाल, सेलो ग्रुप के चेयरमैन श्री घीसुलाल बदामिया तथा जीटो के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र बलडोटा विशेष रूप से उपस्थित थे। लगभग दो हजार लोगों की उत्साहवर्धक उपस्थिति में यह भव्य अलंकरण समारोह गरिमापूर्ण ढंग से आयोजित किया गया। जैन विश्व भारती के सर्वसक्षम और अर्हतासंपन्न अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया के इस विशिष्ट सम्मान से सम्मानित होने पर जैन विश्व भारती परिवार उन्हें आंतरिक बधाई देता है और उनके श्रेय पथ पर अनवरत अग्रसर रहने हेतु अनंतानंत शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ प्रकट करता है।

आह्लादक शुभागमन

नागौर जिला पुलिस अधीक्षक का जैन विश्व भारती में पदार्पण

नागौर जिले के पुलिस अधीक्षक श्री हरिप्रसाद शर्मा सपरिवार जैन विश्व भारती पधारे और यहाँ चल रही विभिन्न प्रवृत्तियों को निकटता से देखा-परखा। जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने शर्मा दम्पत्ति को यहां संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी दी एवं साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया। अपने इस आगमन पर श्री शर्मा ने कहा कि जैन विश्व भारती नागौर जिले की ऐसी संस्था है जहां उच्च शिक्षा और शोध कार्य के साथ ही राष्ट्रीय समस्याओं का सटीक समाधान मिल सकता है। इस प्रकार का शांत तथा पर्यावरण पोषक वातावरण जिले में अन्यत्र दुर्लभ है। उल्लेखनीय है कि श्री शर्मा आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ का आशीर्वाद प्राप्त कर चुके हैं एवं उनसे अत्यंत प्रभावित हैं।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

आकर्षण का केन्द्र : जैन विश्व भारती

समणी ऋजुप्रज्ञा

योगक्षेम वर्ष ई. सन् 1990 में मुझे जन्मभूमि चंदेरी में स्थित जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा के विशाल प्रांगण में युगप्रधान आचार्य तुलसी के कर-कमलों से समण श्रेणी में दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसी वर्ष गुरुदेव तुलसी ने एक कृति की रचना की - 'तेरापंथ प्रबोध', जिसकी एक पंक्ति थी - '*कामधेनु है विश्व भारती शिक्षण संस्था वरदायी*।'

उस समय मैं जब-जब इस पंक्ति को सुनती तो भीतर में एक जिज्ञासा होती कि यह जैन विश्व भारती कामधेनु कैसे है? क्योंकि कामधेनु तो उसे कहते हैं जो हर कामना को पूरा करे। 21 वर्षों से लगातार इस परिसर में रहते हुए अब मुझे लगता है कि जैन विश्व भारती सचमुच कामधेनु है।

व्यक्ति का आकर्षण उसी ओर होता है जो उसकी कामना को पूरा करता है। हर व्यक्ति के भीतर अनेक इच्छाएं और कामनाएं होती हैं, जिनमें महत्वपूर्ण चार कामनाएं हैं जिनकी पूर्ति जैन विश्व भारती करती है। इसीलिए यह जन-जन के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

1. *व्यक्ति की पहली कामना है – शांति*। मैंने स्वयं अनुभव किया है और इस परिसर में रहने वालों तथा देशी-विदेशी आगन्तुक विद्वानों से भी सुना है कि 'हम देश-विदेश में बहुत घूमे पर जैन विश्व भारती के इस रमणीय वातावरण में जो शांति मिलती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस परिसर में प्रवेश करते ही यहां के पवित्र स्पन्दन एक अपूर्व मानसिक शांति का अहसास करवाते हैं।' वस्तुतः इस संस्था के लिए ससम्मान अभिव्यक्त यह उक्ति सार्थक सिद्ध होती है कि 'Jain Vishva Bharati is a land of Peace, Penance and Peacock.'

2. *व्यक्ति की दूसरी कामना है – अभय*। आज चारों ओर भय का साम्राज्य है। सुबह घर से ऑफिस निकलते समय व्यक्ति को यह भय बना रहता है कि शाम को सही सलामत घर पहुंच पाएगा या नहीं, पर जैन विश्व भारती के परिसर में आधी रात को भी कोई बालक, युवा, महिला निर्भय हो विचरण कर सकते हैं। न केवल मानव अपितु परिसर में चतुष्पद प्राणी से लेकर मोर, कबूतर, तोता आदि पक्षी भी निर्भयता का अनुभव करते हैं, क्योंकि उन्हें भी यह विश्वास है कि इस तपोवन में हमें कोई भी नुकसान नहीं पहुँचायेगा। अतः जब कोई उनके पास से गुजरता है तो वे भय से भागते नहीं, अपितु बड़े सहज भाव से विचरते रहते हैं।

3. *व्यक्ति की तीसरी कामना है -- मैत्री*! मैत्री अर्थात अपनों के साथ और सबके साथ अपनेपन की अनुभूति। इस परिसर में रहने वाले सभी परिवार अपनेपन की भावना से जुड़े हुए हैं। यहाँ कार्य करने वाले कर्मचारी भी केवल वेतन की भावना से नहीं, बल्कि सेवा की भावना से कार्य करते हैं। यहां की टीम के लिए कहा जा सकता है कि यह ऐसे लोगों का समूह हो जो अपनी योग्यता, अनुभव और प्रतिभा में भले ही समान न हो, पर अपनी निष्ठा, संलग्नता और समर्पण की दृष्टि से कोई किसी से कम नहीं है – Team is a group of people, who are not equal in qualification, experience of talent, but are equal in commitment, loyalityand dedication.

4. *व्यक्ति की चौथी कामना है -- अध्यात्म*। जैन विश्व भारती आचार्य तुलसी की कर्मस्थली और आचार्य महाप्रज्ञ की साधनास्थली रही है। वर्षों की सघन साधना के बाद प्रेक्षाध्यान का अनुसंधान परिसर में स्थित तुलसी अध्यात्म नीडम् में हुआ। अध्यात्म के पिपासु अनेक साधक देश-विदेश से साधना हेतु यहाँ आते हैं और आत्मानुभूति कर आनन्द का अनुभव करते हैं। अध्यात्म की सुगंध परिसर के प्रत्येक कण में व्याप्त है, जिसका अनुभव हम हर क्षण करते रहते हैं।

वर्तमान अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण अपने ऊर्वर चिंतन से इस जैन विश्व भारती को शिक्षा और साधना की दृष्टि से नए-नए आयाम प्रदान कर रहे हैं। यहां की सशक्त, शिक्षित और समर्पित टीम एक मिशन के साथ परिसर का कायाकल्प कर रही है। परिणामस्वरूप शांति, अभय, मैत्री और अध्यात्म जैसी कामनाओं को पूरी करने वाली यह कामधेनु आज भारत की ही नहीं, विश्व के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

मानवता की सेवा का श्रेष्ठ संस्थान : जैन विश्व भारती

हेमन्त नाहटा, रायचुर (कर्नाटक)

मेरे पिताजी स्वतंत्रता सेनानी स्व. नैनसुखजी नाहटा स्वतंत्रता की लड़ाई में तीन माह जेल में रहे। उस दौरान महात्मा गांधी के साथ रहने का उन्हें मौका मिला। देश स्वतंत्र होने के बाद भी वे सदैव समाज सेवा में लगे रहे। इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, यशवंतराव चव्हाण, अन्ना हजारे जैसी हस्तियों से उनके बहुत ही करीबी संबंध रहे। ऐसे कट्टर गांधीवादी कार्यकर्ता का पुत्र होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। उन्हीं के संस्कारों से मेरी भी बचपन से ही समाजसेवा तथा राष्ट्रसेवा के कार्यों के प्रति रुचि बनी रही। अपना व्यवसाय और परिवार संभालते हुए भी मेरा अधिकतर समय सामाजिक कार्य में लगता। मुझे इंटरनेशनल जुनियर चेंबर (जेसीज) जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्था में अध्यक्ष के रूप में काम करने का मौका मिला। उसी दौरान मैंने देश के अलग-अलग प्रांतों में घूमकर संगठन का कार्य किया। जैन समाज के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री शांतिलालजी मुथा (पुणे) के साथ शिक्षा तथा सामाजिक सेवा का बहुत ही उपयोगी अनुभव प्राप्त हुआ। आदरणीय ज्येष्ठ समाजसेवी अन्ना हजारे जी के साथ सन् 1977 से लगातार काम करने से मेरे जीवन को एक नई दिशा मिली।

दो साल पहले मेरी बाईपास सर्जरी हुई। उस समय मेरे मन में एक अद्भुत भावना पैदा हुई कि जीवन के इस पड़ाव पर मैं कुछ वर्ष अपने परिवार तथा मित्रों से दूर रहकर मानवता की निःस्वार्थ सेवा करूँ। यह विचार मैंने अपनी धर्मपत्नी को बताया तो उन्होंने भी मेरा साथ देने का आश्वासन दिया।

इस विचार को साकार करने के लिए मैंने अपनी पत्नी के साथ अरविन्द आश्रम - पाण्डिचेरी, ब्रह्मकुमारी अध्यात्म केन्द्र - माउण्ट आबू एवं पतंजलि योगपीठ - हरिद्वार एवं न जाने कितने ही ऐसे केन्द्रों में मानव सेवा के उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रवास किया। उसी दौरान मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री शांतिलालजी नाहटा एवं श्री प्रसन्नजी नाहटा (रायचुर) के सहयोग से मुझे श्रद्धेय समणी ज्ञानप्रज्ञाजी के दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ और मेरी सेवा भावना के बारे में उनसे चर्चा हुई। समणीजी ने मेरे मनोभाव को देखते हुए जैन विश्व भारती, लाडनूं में पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन दर्शन करवाये एवं उन्हें मेरी सेवा भावना से अवगत कराया।

आचार्यश्री से चर्चा के बाद मेरे मन में यह विचार आया कि क्यों न मैं अपनी सेवाएं जैन विश्व भारती, लाडनूं में प्रदान करूं। आचार्यश्री ने भी इसकी पुष्टि की। आचार्यश्री के निर्देशानुसार जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया ने मुझे जैन विश्व भारती में सेवाएं देने की अनुमति प्रदान की और मेरी इस संस्थागत सेवाओं में सभी तरह का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की इस पावन धरा पर आकर अपनी सेवाएं देते हुए मन को न केवल संतोष मिलता है, बल्कि आत्मिक शांति भी प्राप्त होती है। शायद यह वही अलौकिक शक्ति थी जो मुझे यहां खींच लाई। पिछले छह माह के दौरान मुनिवरों के सान्निध्य में विभिन्न विभागों में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। यद्यपि मेरे लिए यह कार्यक्षेत्र बिलकुल नया था, नया प्रांत, प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियां, लेकिन यहां के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ का मुझे बहुत ही सहयोग मिला।

जैन विश्व भारती तथा यहां चलने वाली विभिन्न प्रवृत्तियों को देखकर मेरा एक ही लक्ष्य है कि इस संस्था की गतिविधियों एवं सेवाकारी उपक्रमों से संपूर्ण देश-दुनिया के सभी लोगों को परिचित करवाया जाए एवं विभिन्न वर्गों के लोगों को इससे जोड़कर इसे सशक्त किया जाए। मुझे न केवल आशा है, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आचार्यश्री के आशीर्वाद से मैं अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होऊँगा।

आचार्यश्री महाश्रमणजी एवं प्रभारी संत प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी से प्राप्त होने वाला नियमित मार्गदर्शन एक नई ऊर्जा का संचार करता है एवं मैं इस छोटे-से संकल्प को पूरा करने में तत्पर हो जाता हूँ।

जैन विश्व भारती प्रबंध समिति एवं विशेष तौर पर अध्यक्ष महोदय का जो सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन मुझे मिला है, उससे मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपने सेवा रूपी संकल्प को और बेहतर तरीके से पूर्ण कर पाऊंगा।

प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान मानवीय मूल्यों के आधार स्तंभ हैं और इन दोनों स्तंभों को समाज के लिए तैयार करना जैन विश्व भारती की मूल प्रवृत्ति है। वर्तमान वातावरण एवं समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए इनके विस्तृत फैलाव की आवश्यकता है। संस्था की ऊंचाइयों के नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए मैं एक कोशिश कर रहा हूं। पूज्यप्रवरों के आशीर्वाद से मेरी कोशिश जरूर रंग लाएगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

जैन विश्व भारती : राजनयिकों की नजर में

जैन विश्व भारती अपने हरे-भरे प्रदूषण मुक्त परिवेश के साथ प्राचीन गुरुकुल परंपरा का निर्वाह कर रही है तथा ग्रामीण जनता, खासकर महिलाओं में शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य कर रही है। यह संस्थान अनेक अंतरधर्मावलम्बी परियोजनाओं को अपनाने तथा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय शांति को कायम करने के लिए धर्मों की एकता एवं प्रबुद्ध नागरिकता की स्थापना हेतु बुनियादी आधार एवं सहयोग प्रदान कर राष्ट्र तथा विश्व के लिए भी उल्लेखनीय कार्य कर रही है।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति
(विज्ञप्ति, वर्ष -11, अंक - 29, 30 अक्टूबर -5 नवंबर 2005)

जैन विश्व भारती में अध्यात्म के साथ विज्ञान, अहिंसा, अपरिग्रह तथा समभाव को कसौटी पर कसने का अनुपम प्रयोग किया जा रहा है। प्राकृत-संस्कृत के ग्रंथों के अनुशीलन तथा प्रयोगों से गुजरकर यहां जो अनुभव करने की कोशिश की जा रही है, उससे भारत का ही नहीं सारी दुनिया का भला हो सकता है।

डॉ. शंकरदयाल शर्मा, पूर्व उपराष्ट्रपति
(जैन विश्व भारती शुभागमन पर, 02.04.1992)

लोकतंत्र की कुंजी है चरित्र-निर्माण। हमारे देश के लोगों में प्रतिभा है, क्षमता है, बशर्ते उन्हें काम करने का अवसर मिले। हमारे वैज्ञानिक और डॉक्टर विदेशों में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। उनकी वहां अच्छी प्रतिष्ठा और इज्जत है। जैन विश्व भारती, मान्य विश्वविद्यालय शैक्षणिक क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित करेगा, ऐसा विश्वास है। यहां बौद्धिक एवं शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक व भावनात्मक विकास के लिए भी पर्याप्त अवकाश है।

आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत व जीवन विज्ञान के माध्यम से राष्ट्रीय चरित्र के विकास में बहुत अच्छा योगदान कर रहे हैं, यह हमारे सौभाग्य की बात है।

लालकृष्ण आडवाणी, पूर्व गृह मंत्री
(जैन विश्व भारती शुभागमन पर 31.08.1992)

संस्मरण

मेरे जीवन की निर्माणस्थली : जैन विश्व भारती

महिमा जैन, (तकनीकी सहायक, वर्धमान ग्रंथागार)

मैं सागर, मध्यप्रदेश की मूल निवासी हूँ। सन् 1993 में मैं जैन विश्व भारती से इस तरह जुड़ी कि आज यह संस्था मेरे जीवन की निर्माणस्थली बन गई है। मेरे पति श्री पूरनचंद जैन पारमार्थिक शिक्षण संस्थान में संस्कृत विषय के व्याख्याता थे। 17 अगस्त 1993 को आकस्मिक बीमारी से उनका देहान्त हो गया। मेरे जीवन में अंधकार के सिवा कुछ नहीं बचा। केवल 23 वर्ष की उम्र में दो छोटे बच्चों की जिम्मेदारी भी मुझ पर आ गई। उसस मयअ ाचार्यत ुलसीक ाच ातुर्मासर ाजलदेसरम ेंथा । म ैंअ ाध्यात्मिकस ंबलल ेनेह ेतुअ पनेब ाच्चोंके स ाथ राजलदेसर गई। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि क्या तुम यहां (जैन विश्व भारती) रहना चाहती हो? मैंने बिना कुछ सोचे-विचारे तत्काल गुरुदेव को हां भर दी। इस पर आचार्य तुलसी ने आशीर्वचन में कहा की तुम यदि जैन विश्व भारती में संस्थान की बेटी बनकर रहोगी तो तुम्हें कभी कोई परेशानी नहीं होगी। गुरुदेव का आशीर्वाद पाकर मैंने जैन विश्व भारती में रहने का निर्णय किया। यद्यपि मेरे परिवारजनों ने मेरे इस निर्णय का भरपूर विरोध किया तथापि मैं इस विषय में दृढ़ संकल्पित हो चुकी थी कि अब मैं यही रहकर अपने बच्चों को पढ़ा लिखा कर बड़ा करूँगी। गुरुदेव के आशीर्वाद से मुझे विमल विद्या विहार विद्यालय में अध्यापिका के पद पर नियुक्ति मिली। लगभग दो वर्ष तक वहां काम करने के बाद मैंने वर्धमान ग्रंथागार में काम करना प्रारंभ किया। काम के साथ-साथ मैंने अपना अध्ययन भी जारी रखा और क्रमशः बी.ए., बि. लिब., एम.ए. (हिन्दी एवं जैन विद्या), नेट, एम. लिब. तथा कम्प्यूटर का सर्टीफिकेट कोर्स किया। आज मैं वर्धमान ग्रंथागार में तकनीकी सहायक के पद पर कार्यरत हूँ।

मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ साधु-साध्वियों एवं समणीवृंद के प्रति, जिनकी कृपा मुझे अनवरत प्राप्त हुई। मैं आभारी हूं जैन विश्व भारती का, जिसके सहयोग और समर्थन से मेरे जीवन को नई रोशनी मिली। आज मेरा बेटा इंजीनियर बन चुका है तथा बेटी बी.कॉम. फाइनल में अध्ययनरत है। मैं जैन विश्व भारती के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

कामधेनु जैन विश्व भारती

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

जैन विश्व भारती के प्रथम पोषक 'पद्मश्री' प्रभुदयाल जी डाबड़ीवाल

तेरापंथ धर्मसंघ के निष्ठावान और समर्पित सेवाभावी श्रावक स्वनामधन्य श्री प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल का जीवन अनेक विशिष्टताओं का समुच्चय था। वे बहुआयामी व्यक्तित्व से समृद्ध थे। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और मानवता के कल्याण के क्षेत्र में उनके अवदान इतिहास के अंग हैं। इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने वह ऊँचाई प्राप्त की जो उन जैसे कर्मठ, निष्ठाशील और परहितकारी व्यक्ति के लिए ही संभव था। एक विनीत व्यवसायी के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने विकास के नए-नए सोपानों को जिस त्वरा के साथ पार किया और लक्षित गंतव्य तक पहुँचे, वह उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक था।

मूलरूप से डाबड़ी ग्राम निवासी श्री गंगाजलजी डाबड़ीवाल के ज्येष्ठ पुत्र श्री प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल (कलकत्ता निवासी) तेरापंथ धर्मसंघ के आधार स्तंभ और उदारमना श्रावकों में से थे। जैन विश्व भारती की स्थापना की कल्पना जब श्री भंवरलालजी दूगड़ ने प्रस्तुत की थी तब उसे रूपाकृति प्रदान करने के लिए प्रभुदयालजी ने पहल की और जैन विश्व भारती के प्रथम पोषक की भूमिका निभाई। जैन विश्व भारती के निर्माण के संबंध में आचार्य तुलसी के सपनों को साकार करने में उन्होंने जिस लगन, निष्ठा और अध्यवसाय के साथ कार्य किया वह जैन विश्व भारती के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है। आचार्यश्री ने जिस रूप में जैन विश्व भारती की परिकल्पना की थी, उसे वही स्वरूप प्रदान करने हेतु वे अनवरत सक्रिय रहे और उनके इंगित की आराधना करते हुए अपना श्रम, शक्ति और सामर्थ्य नियोजित करते रहे। गुरु के इंगित को शिरोधार्य कर उन्होंने विभिन्न प्रवृत्तियों में सक्रिय योगदान दिया। संघ और संघपति के प्रति अटूट श्रद्धा और समर्पण उनमें सदैव परिलक्षित होता था। तेरापंथ धर्मसंघ की शायद ही ऐसी कोई प्रवृत्ति रही होगी, जिनमें उनका उल्लेखनीय योगदान न रहा हो। धर्म, गुरु और देव के प्रति उनकी असीम निष्ठा तथा संघ एवं संघपति के प्रति समर्पण एवं सेवा का मूल्यांकन करते हुए आचार्यश्री ने उन्हें 'समाजभूषण' के अलंकार से अलंकृत किया था।

स्वभाव से सरल और विचार से उन्नत प्रभुदयालजी ने सामाजिक और राजनीतिक जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए। शीर्ष राजनेताओं से लेकर सामान्य कार्यकर्ता तक की बातों को ध्यान से सुनना और समाज एवं जनहित में कार्य करना उनकी एक खास विशेषता थी। यही कारण था कि देश के राजनीतिक, सामाजिक एवं औद्योगिक सभी क्षेत्रों के उच्चस्तरीय एवं विशिष्ट लोगों से उनका निकट संपर्क बना।

डाबड़ीवालजी एक सच्चे देशभक्त थे। देश की आजादी से लेकर उनके सर्वविध विकास के लिए वे अनवरत प्रयासरत रहे। देश के एक सजग एवं कर्तव्यशील नागरिक के रूप में उन्होंने अपनी भूमिका पूरी तत्परता एवं निष्ठा के साथ निभाई। देश हित में उन्होंने बड़े-बड़े राजनेताओं के साथ मिलकर कार्य किए। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं और देशभक्ति का मूल्यांकन करते हुए उन्हें देश का गरिमापूर्ण सम्मान 'पद्मश्री' प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल ने अपनी कार्यक्षमता और पुरुषार्थ से न केवल तेरापंथ धर्मसंघ में अपितु अन्यान्य समाजों में भी महत्वपूर्ण एवं रेखांकनीय स्थान बनाया। ऐसे समाजसेवी और संघसेवी श्रावक प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल के व्यक्तित्व और कर्तृत्व की गौरवगाथाएँ सदैव धर्मसंघ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

दृढ़ मनोबल : जीवन की सार्थकता का रहस्य

धर्मचन्द चौपड़ा
(पूर्व अध्यक्ष, जैन विश्व भारती)

एक उद्योगपति ने एक साक्षात्कार में कहा कि मुझे मेरे पिताजी ने कहा था कि बेटा तुम जो भी बनना चाहो वही बनो, पर विश्व स्तर का बनना। अगर प्ले-ब्वॉय बनो तो विश्व का श्रेष्ठ प्ले-ब्वॉय और अगर उद्योगपति बनो तो विश्व का श्रेष्ठ उद्योगपति। वह युवक है बजाज ऑटो के श्री राहुल बजाज।

इस बिन्दु पर सोच उभरती है कि हम दायें जाएं चाहे बाएं, अगर श्रेष्ठ बनना है तो दृढ़ मनोबल चाहिए। गीता से लेकर जितने ग्रंथ हैं वे सभी हमें यही कहते हैं कि 'मनोबल' ही वह शक्ति है जो भटकते हुए व्यक्ति को लक्ष्य तक पहुंचाती है। घुटने टेके हुए व्यक्ति को हाथ पकड़ कर उठा देती है। अंधेरे में रोशनी दिखाती है। विपरीत स्थिति में भी मनुष्य को कायम रखती है। वरना हम अन्ध-विश्वासों में, ताबीजों, मंत्रों-तंत्रों के चक्कर में मनोबल जुटाने के बहाने और कमजोर हो जाते हैं।

एक दृढ़ मनोबली व्यक्ति के निश्चय के सामने जगत झुक जाता है। बाधाएं अपने आप हट जाती हैं। जब कोई मनुष्य समझता है कि वह किसी काम को नहीं कर सकता तो संसार का कोई भी दार्शनिक सिद्धांत ऐसा नहीं, जिसकी सहायता से वह उस काम को कर सके। यह स्वीकृत सत्य है कि दृढ़ मनोबल से जितने कार्य पूरे होते हैं उतने अन्य किसी मानवीय गुणों से नहीं होते।

संयम का अर्थ त्याग नहीं है। संयम का अर्थ है मनोबल का विकास। संकल्प शक्ति का विकास। सच्चाई की कसौटी पर खरा उतरा हुआ वाक्य है कि 'संयम ही जीवन है।' संयम नहीं, संकल्प नहीं, मनोबल नहीं, तो जीवन क्या है? मात्र बुझी हुई राख है। फिर तो वह मृत्युमय जीवन है। भयभीत जीवन है।

गांव की एक सुनसान गली। रात का सन्नाटा। एक व्यक्ति अपने घर लौट रहा है। गली में कुत्ता भौंकता है। मनुष्य डर जाता है। कुत्ते के काट खाने की कल्पना मात्र से ही भयभीत हो जाता है। उसे अकेले में कुछ नहीं सूझता। एक पत्थर उठा लेता है। हथेली में मजबूती से पकड़ कर धीरे-धीरे आगे बढ़ता है और भौंकते कुत्ते के पास से गुजर कर घर पहुंच जाता है।

यह पत्थर ही तो है - मनोबल, संकल्प, संयम, जिसके सहारे जीवन की कठिनाइयों को पार किया जा सकता है।

मोक्ष का मार्ग

आचार्य महाश्रमण

संपूर्ण ज्ञान का प्रकाशन केवलज्ञान की भूमिका में ही हो सकता है। जिसको केवलज्ञान प्राप्त हो गया, उसके लिए दुनिया का कोई भी तथ्य, कोई भी घटना अज्ञात नहीं रहती। किंतु केवलज्ञान की प्राप्ति तब तक संभव नहीं है जब तक राग-द्वेष और मोह दूर नहीं हो जाता है। तात्विक भाषानुसार बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म सर्वथा क्षीण हो जाता है और तेरहवें गुणस्थान में केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। मोह क्षीण हुए बिना केवलज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए केवलज्ञान की प्राप्ति के लिए जरूरी है कि मोह का नाश हो। जब तक मोह रहेगा तब तक राग-द्वेष भी रहेगा। राग और द्वेष को कर्मबीज के रूप में अभिहित किया जाता है। जब तक ये बीज विद्यमान रहते हैं तब तक आत्मा एकान्त सुख को प्राप्त नहीं कर सकती। जितना-जितना राग-द्वेष, उतना-उतना दुख और जितनी-जितनी वीतरागता, उतना-उतना सुख। राग-द्वेष और मोह के क्षय से ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

संस्थान के समर्पित कर्मी : श्री राजेश भदौरिया

जैन विश्व भारती की विकास यात्रा की महत्वपूर्ण कड़ी इस संस्था के समर्पित कर्मीगण हैं। सेवाभावी और सरलमना कर्मियों से इस संस्थान की नींव मजबूत हुई है और जैन विश्व भारती ने विकास की बुलन्दियों को छुआ है। संस्थान के एक ऐसे ही सर्मपित कर्मी हैं - श्री राजेश भदौरिया।

सोथड़ा (उत्तर प्रदेश) के मूल निवासी श्री राजेश भदौरिया सन् 1982 से जैन विश्व भारती में कार्यरत हैं। प्रारंभ के चार वर्ष जैन विश्व भारती के प्रेस में काम करने के बाद सन् 1986 में इनकी नियुक्ति मुख्य इलेक्ट्रिशियन के पद पर हुई। नियुक्ति से लेकर अब तक ये पूरी निष्ठा भावना और समर्पण के साथ कार्य कर रहे हैं। इनका विवाह सन् 1984 में हुआ और आज पत्नी, दो लड़के और एक लड़की से युक्त इनका भरापूरा परिवार है। इनका बड़ा बेटा दिल्ली में कार्यरत है, छोटा लड़का बी.कॉम. फाइनल में अध्ययनरत है एवं लड़की बी.एड. की शिक्षा ग्रहण कर रही है। इस परिसर में रहकर श्री राजेश ने स्वयं का भी विकास किया एवं अपने बच्चों को भी पढ़ा-लिखाकर योग्य बनाया।

अपनी सहजता, सरलता और सादगी से श्री राजेश भदौरिया ने परिसर निवासियों एवं कर्मचारियों में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। वे एक पारिवारिक सदस्य की तरह सभी से जुड़े हुए हैं। सभी के प्रति इनका अपनत्व भाव, कार्य के प्रति समर्पण और निष्ठा भावना अत्यंत प्रशंसनीय है।

नई नियुक्ति	**श्री हेमन्त नाहटा**	प्रधान, परिचालन (मानद सेवा)	01.07.11
सेवानिवृत्ति	**श्री प्रह्लाद भाटी**	वरिष्ठ लिपिक	31.07.11
	श्री नन्दकिशोर स्वामी	कम्प्यूटर ऑपरेटर	15.07.11
	सुश्री अनिता शर्मा	कम्प्यूटर ऑपरेटर	15.07.11

विशेष अनुरोध

कामधेनु के अप्रैल-जून 2011 के अंक में विविधा के अंतर्गत पाठकों के लिए एक प्रश्न मंच प्रतियोगिता प्रारंभ की गई थी, जिसमें जैन विश्व भारती से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने थे। उक्त प्रतियोगिता का उद्देश्य पाठकों को जैन विश्व भारती के संबंध में विस्तृत जानकारी अर्जित करने हेतु प्रेरित करना और उनमें रचनात्मक प्रतिस्पर्धा का भाव पैदा करना था। प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के लोग भाग ले सकते हैं।

किन्तु हमें उक्त प्रतियोगिता के समय संतोषजनक प्रविष्टियां प्राप्त नहीं हुईं, जिसकी वजह से इस अंक में उनके हल प्रकाशित नहीं किए जा सके।

कामधेनु के पाठकों से अनुरोध है कि जैन विश्व भारती से संबंधित उन प्रश्नों के हल खोजने में अपनी प्रतिभा और श्रम का प्रयोग करे और प्रतियोगिता को सफल बनाएं।

संपादक

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती के नए सदस्य

01. श्री के. सुरेन्द्र कुमार जैन — चेन्नई
02. श्री एम. राजेश कुमार जैन — चेन्नई
03. श्री बी. सिद्धार्थ सकलेचा — चेन्नई
04. श्री उम्मेदसिंह बोकड़िया — चेन्नई
05. श्री अशोक कुमार सांड — चेन्नई
06. श्री पी. महावीरचंद परमार — चेन्नई
07. श्री तनसुखलाल नाहर — चेन्नई
08. श्री एम. अशोक कुमार गादिया — चेन्नई
09. श्रीमती सूर्याकान्ता नाहटा — कोलकाता
10. श्री दीपक मेहता — चेन्नई
11. श्री रमेशचंद बोहरा — चेन्नई
12. श्री ताराचंद कुमावत — चेन्नई
13. श्री राहुल कुमावत — चेन्नई
14. श्री महेन्द्र सेठिया — चेन्नई
15. श्री एन. राजेश कुमार — चेन्नई
16. श्री भरत कुमार मरलेचा — चेन्नई
17. श्री अशोक कुमार जे. डागा — चेन्नई
18. श्री जे. विजय सुराणा — चेन्नई
19. श्री जयन्तीलाल जी. सुराणा — चेन्नई
20. श्री पी. विनोद पितलिया — चेन्नई
21. श्री पी. संजय पितलिया — चेन्नई
22. श्री पी. सुनील पितलिया — चेन्नई
23. श्री ए. अरविन्द कुमार — चेन्नई
24. श्री ए. अनिल कुमार — चेन्नई
25. श्री देवराज आच्छा — चेन्नई
26. श्री सूरज कुमार धोका — चेन्नई
27. श्री जी. गौतमचंद धारीवाल — चेन्नई
28. श्री सी. अशोक कुमार सेठिया — चेन्नई
29. श्री नथमल मरलेचा — चेन्नई
30. श्री नीरज एम. मरलेचा — चेन्नई
31. श्री उगमराज सांड — चेन्नई
32. श्री जी. पारसमल परमार — चेन्नई
33. श्री एस. संतोष कुमार परमार — चेन्नई
34. श्री जी. सुकनराज परमार — चेन्नई
35. श्री जी. रमेश कुमार परमार — चेन्नई
36. श्री सुखराज पितलिया — चेन्नई
37. श्री मनोहरलाल — चेन्नई
38. श्री बी. हेमन्त कुमार जैन — चेन्नई
39. श्री एम. किरणराज जैन — चेन्नई
40. श्री घीसूलाल बोहरा — चेन्नई
41. श्री राजेश एम. जैन (मरलेचा) — चेन्नई
42. श्री सुदर्शन आच्छा — चेन्नई
43. श्री जे. गौतमचंद सेठिया — चेन्नई
44. श्री पी. महावीरचंद — चेन्नई
45. श्री सी. कुशलराज — चेन्नई
46. श्री टी. राजेश सेठिया — चेन्नई
47. श्री राकेश कुमार जैन — चेन्नई
48. श्री एस. विनोद कुमार जैन — चेन्नई
49. श्री एन. सुगालचंद जैन — चेन्नई
50. श्री दिलीप कुमार — चेन्नई
51. श्री विजय दूगड़ — हनुमानगढ़ टाउन
52. श्री रणजीत चोरड़िया — कोलकाता
53. श्री एस. प्रसन्नचंद जैन — दिल्ली

जैन विश्व भारती में इस समयावधि में जुड़े नए सदस्यों का हार्दिक स्वागत!

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

विमल विद्या विहार में नई तकनीक का समावेश

स्मार्ट क्लास : अनुभूति

विमल विद्या विहार की पांच कक्षाओं को श्री अभय दूगड़, लाडनूं-बैंगलोर के अर्थ सौजन्य से सूचना संवाद तकनीक (Information Communication Technology) के द्वारा 'स्मार्ट क्लास' के रूप में विकसित किया गया है। इस तकनीक में ब्लैक बोर्ड के स्थान पर कंप्यूटर एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से ह्वाइट बोर्ड पर अध्यापन किया जाता है। कक्षाओं के पूरे पाठ्यक्रम कम्प्यूटर में पहले से अपलोड रहते हैं। संभवतः लाडनूं के आस-पास के क्षेत्रों के विद्यालयों में इस आधुनिक तकनीक से संपन्न विमल विद्या विहार प्रथम विद्यालय है।

इस तकनीक के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में हुई सुविधा के बारे में अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अनुभव निम्न प्रकार से हैं –

Technology is developing rapidly. It is available anywhere and for any purpose. It also provides some ease for Teaching. I got some possibilities to make a good use of technology for my teaching through I.C.T. (Information Communication Technology). I can come up with effective and interesting lesson plans through this technology, so that my lessons will be interesting for my students. I have tried some activities of using I.C.T. for learning with my students, however, they could be no longer new to others. I hope this will make my students enjoy their learning and facilitate them to learn.
I am lucky to be able to participate in this project.

Sharmila Nair (Teacher)
Vimal Vidya Vihar

मेरी दृष्टि में स्मार्ट क्लास विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि 'अगर हम किसी चीज को देखकर, पढ़कर और सुनकर सीखते हैं तो हमारा ज्ञान परिपक्व होता है।' उनका कथन यहाँ पूरी तरह सच साबित होता है इससे हमारी बुद्धि का विकास होता है और हमें रटना नहीं पड़ता और हम चीजों को अच्छी तरह समझ भी जाते हैं। इसके माध्यम से हम खेल प्रतियोगिता की भी तैयारी कर सकते हैं। यह बहुत ही कम स्थान पर चलाया जा सकता है और इसके माध्यम से अध्ययन करने वाले बच्चे ज्यादातर परीक्षा में अच्छी सफलता हासिल करते हैं।

पीयूष किल्ला
विमल विद्या विहार, कक्षा : 9

यह नई तकनीक है। इसमें हम चित्र देख सकते हैं और आवाज भी सुन सकते हैं। यह एक पेन से चलता है जिससे काम भी बहुत जल्दी होता है। मुझे स्मार्ट क्लास में जाना बहुत अच्छा लगता है। उसमें पढ़ाई अच्छी तरह हो जाती है। इससे हमारा ध्यान अधिक आकर्षित होता है। इसके माध्यम से पढ़ाई करते समय लगभग सारा पाठ सहज ही याद हो जाता है। यही नहीं, इसमें पाठ का सारांश भी मिल जाता है। मुझे पता नहीं चलता कि पाठ कब चालू हुआ और कब खत्म हो गया। मुझे इसे पढ़ने में मजा आता है। यह हमारे मन को आकर्षित करता है। यह स्मार्ट क्लास हमारे स्कूल में लगाने के लिए धन्यवाद। हमारी इच्छा है कि यह तकनीक सभी स्कूलों में लगाया जाए।

केशव माहेश्वरी
विमल विद्या विहार, कक्षा : 8

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011
कामधेनु जैन विश्व भारती

अनमोल रत्न

शिक्षा है वह अनमोल रत्न,
जिसे पाने के लिए करने पड़ते हैं बहुत जतन
यह है एक ऐसा खजाना
जिसे मुश्किल है लूट ले जाना।

कलम हो या तलवार
जो करता है कानूनी वार
अगर हम प्राप्त करेंगे शिक्षा
तब दुनिया के शिखर पर चढ़ेंगे

बिना शिक्षा के होता है
जीवन बेकार
शिक्षा का सम्मान करेंगे
तब ही हम महान बनेंगे

शिक्षा है मां सरस्वती का प्रसाद
यह है ईश गणेश का आशीर्वाद।

तनिष्क कोली
कक्षा - 6, विमल विद्या विहार

मेरा प्यारा स्कूल

मेरा प्यारा स्कूल
हम बच्चे हैं इसके फूल
इसने हमको पाठ पढ़ाया
जात-पात का भेद मिटाया
करने देता कभी न भूल
पथ-प्रदर्शक मेरा स्कूल
मेरा जीवन निर्माता स्कूल।
मातृ भाव से हमें मिलाता
भाई-भाई से प्यार सिखाता
द्वेष भाव को दूर भगाता
कर्म-प्रधान है जीवन मूल
भाग्य विधाता मेरा स्कूल
मेरा प्यारा विमल स्कूल।

राजेश गट्टानी
कक्षा - 12 (वाणिज्य), विमल विद्या विहार

Pencil shading work
Ritesh Kumawat
Mahapragya International School, Jaipur
Class VI

Crayon work
Chetna Saini
Mahapragya International School, Jaipur
Class VIII

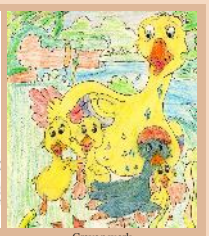

वर्ष 1
अंक 3
जुलाई-सितम्बर
2011

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका 'कामधेनु' का द्वितीय अंक प्राप्त हुआ। काफी आकर्षक लगा। अच्छी शुरुआत हुई है। इस पत्रिका के द्वारा जैन विश्व भारती परिसर, इसमें अवस्थित भवनों, इन भवनों में चलने वाले संघीय आयामों एवं अन्य गतिविधियों की सटीक जानकारी मिलेगी। गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के सपनों की कामधेनु सम्पूर्ण समाज एवं मानव मात्र के लिए वरदान बने तथा आपका यह सुन्दर प्रयास फलीभूत हो, इसी शुभकामना के साथ –

भीखमचंद पुगलिया, कोलकाता

जैन विश्व भारती की त्रैमासिक पत्रिका कामधेनु का दूसरा अंक मिला। पत्रिका के चालीस पृष्ठों में आपने विविधता भर दी है, अच्छा लगा। इस पत्रिका के माध्यम से जैन विश्व भारती की एक-एक प्रवृत्ति की विस्तृत जानकारी (आदि से अब तक) हमें मिले, यह इसका उद्देश्य है। इसे दृष्टिगत रखते हुए एक-एक विषय की जानकारी उपलब्ध आंकड़ों व चित्रों सहित देवें तो ज्यादा उपयोगी होगा। जैसे शिक्षा विषय की जानकारी 5-10 पृष्ठों में पर्याप्त नहीं होगी, इसके लिए कम से कम दो अंक चाहिए। विश्वविद्यालय, कालू कन्या महाविद्यालय, विमल विद्या विहार, जयपुर स्कूल आदि की संक्षिप्त जानकारी सभी को प्राप्त है। आप इनकी आदि से अन्त तक की जानकारी उपलब्ध आकड़ों व चित्रों सहित दें तो वह उपयोगी होगी। इसी तरह परिसर में भवन, गेस्ट हाउस, कांटिज आदि बने हुए हैं, उनको भी एक अंक में चित्रों सहित दें। अगर ऐसा किया जाएगा तो आपका श्रम व पत्रिका की उपयोगिता सार्थक होगी व पत्रिका संग्रहणीय बन जाएगी। इस अंक के लिए पुनः साधुवाद। आदर सहित –

शुभकरण नवलखा, सिलीगुड़ी

I have seen the second issue of 'Kamdhenu', inhouse magazine of Jain Vishva Bharati. It has made it easy to know about JVB activities. There might be certain inherent limitations but the vision is wholesome instead of in fragementation. It must aim for a fundamental transformation in giving necessary information, feed back so that society in general and person in particular are inspired to associate with JVB and its cause.

Noratan Mal Dugar, Jaipur

I have received the second issue of 'Kamdhenu', the magazine that will link the masses to JVB. The personal touch is distinctly felt through the write ups, compilation and coverage It is commendable that the magazine recognizes the work of its dedicated employees and has profiled them here. It has motivated them and made their family proud.

It was amazing to know about the State of the Art Meditation Centre at Houston. More pleasing was the regular use of this infrastructure by way of daily activities. It's another feather in the cap of JVB. Samanijis are making extraordinary efforts and the results are splendid. Gurudev Tulsi envisaged Samanies as new stars of Terapanth constellation and they are making his dream true by sincerely working towards the intellectual and spiritual upliftment of masses.

I Congratulate the whole team of JVB and wishing you all success.

Kalpana Baid, Kolkata